॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

priti
14/02/1985 10:59 AM
Ujjain, Madhya Pradesh

निर्मित

AstroRobo
KNOW YOUR FORTUNE

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	14/02/1985
जन्म समय	10:59
जन्म स्थान	Ujjain, Madhya Pradesh
अक्षांश	23 N 10
देशांतर	75 E 47
समय क्षेत्र	+05:30
अयनांश	23:38:57
सूर्योदय	7:0:8
सूर्यास्त	18:22:17

घात चक्र

महीना	कार्तिक
तिथि	1,6,11
दिन	रविवार
नक्षत्र	मघा
योग	विष्कुम्भ
करण	बव
प्रहर	1
चंद्र	1

पंचांग विवरण

तिथि	कृष्ण दशमी
योग	हर्षण
नक्षत्र	ज्येष्ठा
करण	वणिजा

ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	विप्र
वश्य	कीट
योनि	मृग
गण	राक्षस
नाड़ी	आदि
जन्म राशि	वृश्चिक
राशि स्वामी	मंगल
नक्षत्र	ज्येष्ठा
नक्षत्र स्वामी	बुध
चरण	3
युञ्जा	प्रभाग
तत्त्व	जल
नामाक्षर	यी
पाया	ताम्ब्र
लग्न	मेष
लग्न स्वामी	मंगल

ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	कुम्भ	01:49:30	शनि	धनिष्ठा	मंगल	ग्यारहवाँ
चन्द्र	--	वृश्चिक	25:48:13	मंगल	ज्येष्ठा	बुध	आठवाँ
मंगल	--	मीन	14:59:03	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनि	बारहवां
बुध	--	मकर	27:50:53	शनि	धनिष्ठा	मंगल	दसवां
गुरु	--	मकर	08:04:32	शनि	उत्तर षाढ़ा	सूर्य	दसवां
शुक्र	--	मीन	16:26:45	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनि	बारहवां
शनि	--	वृश्चिक	04:05:39	मंगल	अनुराधा	शनि	आठवाँ
राहु	हाँ	मेष	29:09:37	मंगल	कृतिका	सूर्य	पहला
केतु	हाँ	तुला	29:09:37	शुक्र	विशाखा	गुरु	सातवाँ
लग्न	--	मेष	17:42:00	मंगल	भरणी	शुक्र	पहला

सूर्य
कुम्भ
धनिष्ठा
लाभप्रद

चन्द्र
वृश्चिक
ज्येष्ठा
योगकारक

मंगल
मीन
उत्तर भाद्रपद
योगकारक

बुध
मकर
धनिष्ठा
हानिप्रद

गुरु
मकर
उत्तर षाढ़ा
योगकारक

शुक्र
मीन
उत्तर भाद्रपद
हानिप्रद

शनि
वृश्चिक
अनुराधा
हानिप्रद

राहु
मेष
कृतिका
--

केतु
तुला
विशाखा
--

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

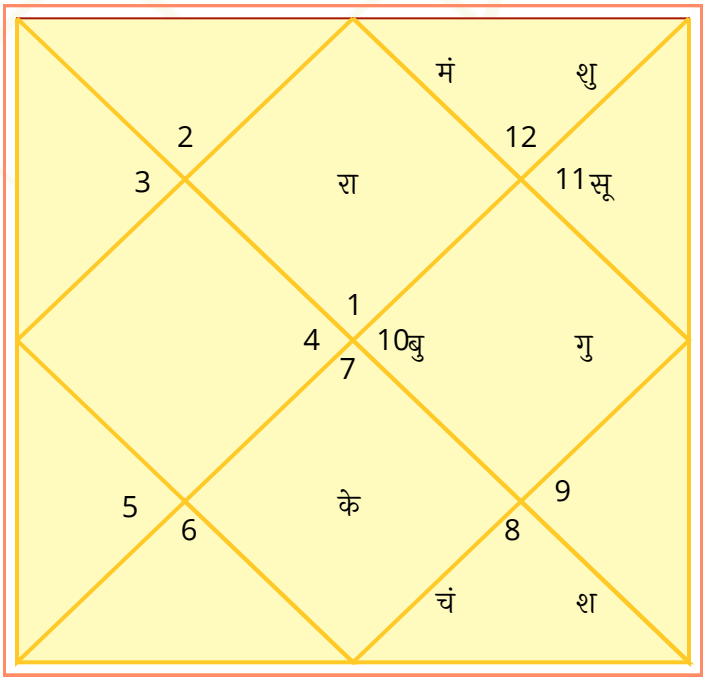

व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते है। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओ और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।

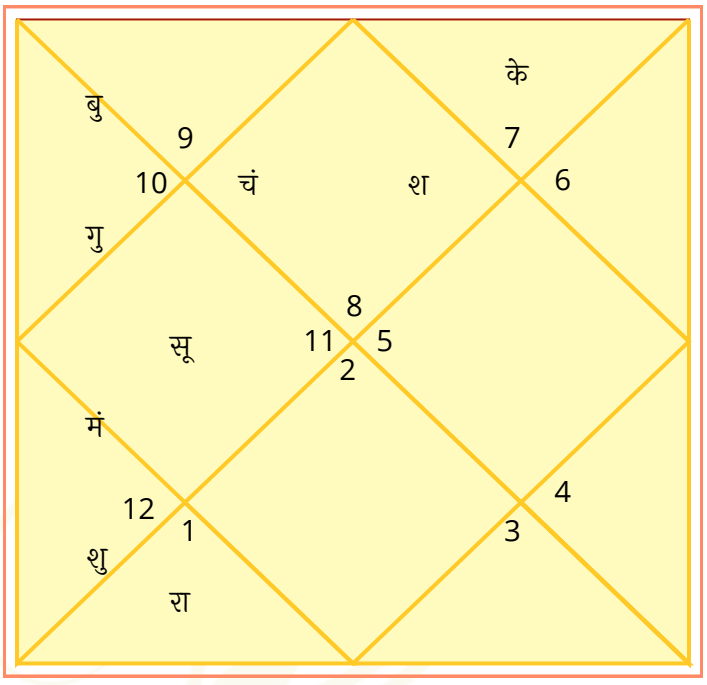

चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निर्माण होता है जो चन्द्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्त्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

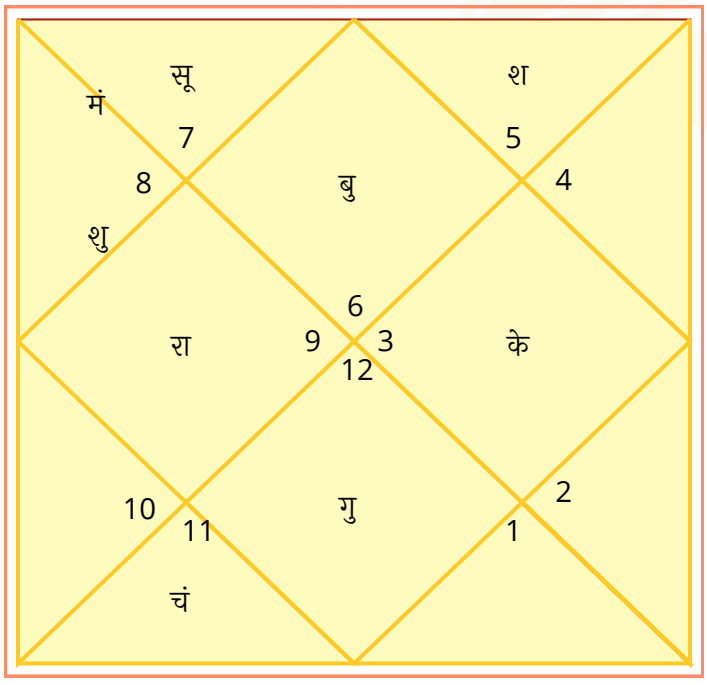

नवमांश कुंडली

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थित उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रुप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

भाव सन्धि

लग्न - 17:42:00 दशम भाव मध्य - 06:23:16

भाव	जन्म राशि	भाव मध्य	जन्म राशि	भाव संधि
1	मेष	17:42:00	वृष	00:48:53
2	वृष	13:55:45	वृष	27:02:38
3	मिथुन	10:09:31	मिथुन	23:16:23
4	कर्क	06:23:16	कर्क	23:16:23
5	सिंह	10:09:31	सिंह	27:02:38
6	कन्या	13:55:45	तुला	00:48:53
7	तुला	17:42:00	वृश्चिक	00:48:53
8	वृश्चिक	13:55:45	वृश्चिक	27:02:38
9	धनु	10:09:31	धनु	23:16:23
10	मकर	06:23:16	मकर	23:16:23
11	कुम्भ	10:09:31	कुम्भ	27:02:38
12	मीन	13:55:45	मेष	00:48:53

चलित कुंडली

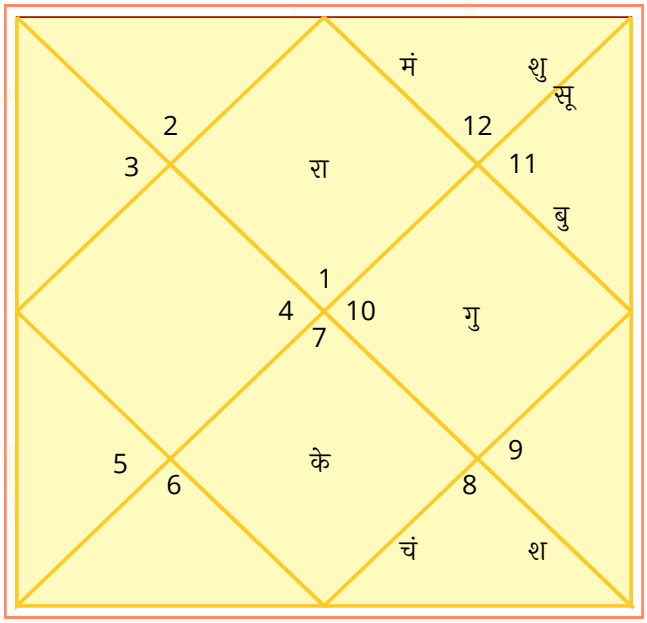

लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।

वर्ग कुंडली

सूर्य कुंडली

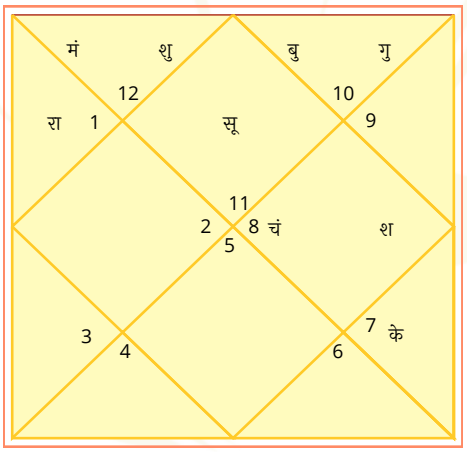

शरीर, स्वास्थ्य, रचना

होरा कुंडली

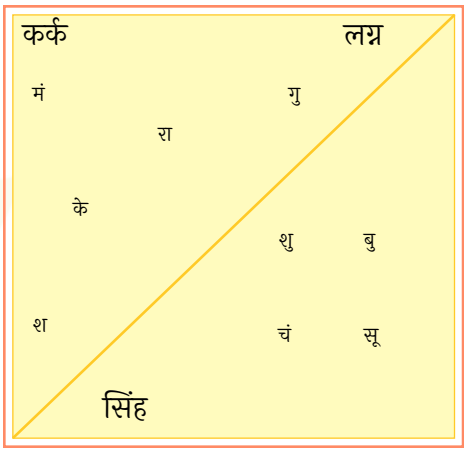

वित्त , धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली

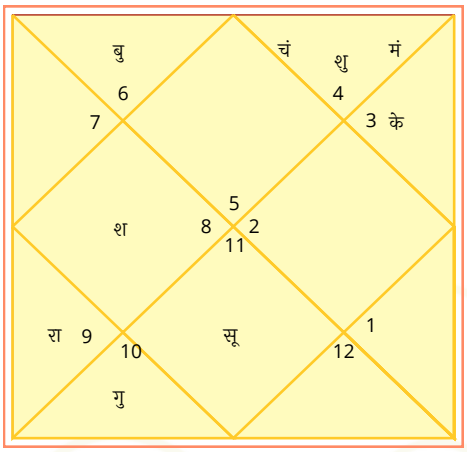

भाई बहन

चतुर्थांश कुंडली

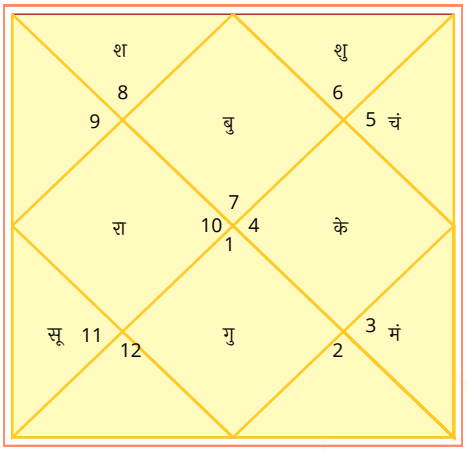

भाग्य

पंचमांश कुंडली

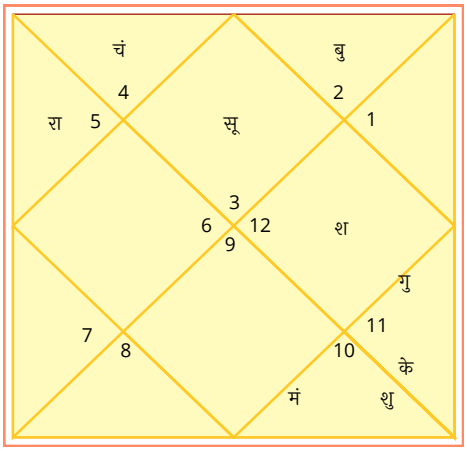

आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली

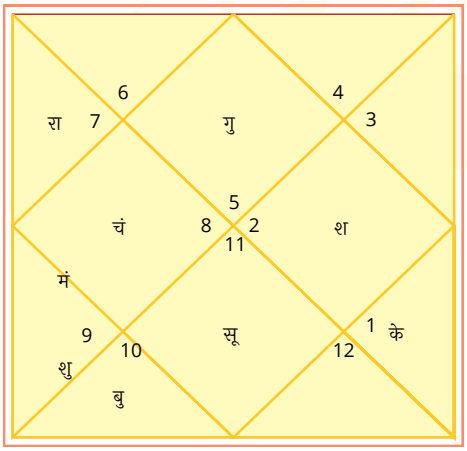

सन्तान

अष्टमांश कुंडली

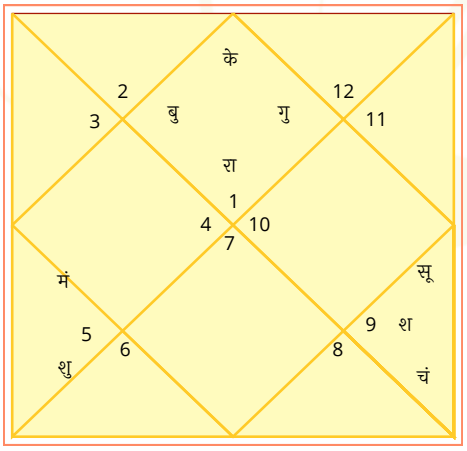

आयु

दशमांश कुंडली

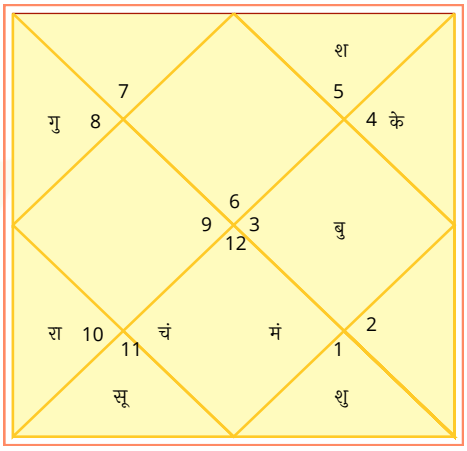

व्यवसाय, जीवनयापन

द्वादशांश कुंडली

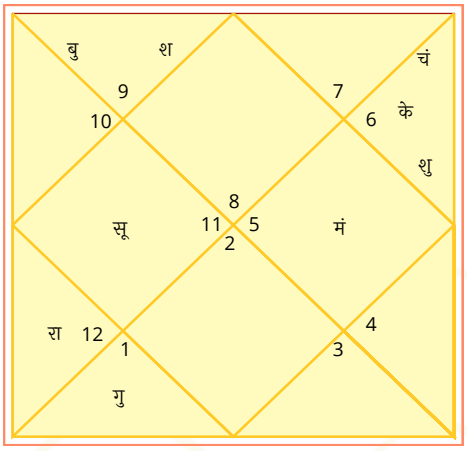

माता-पिता, पैतृक सुख

वर्ग कुंडली

षोडशांश कुंडली

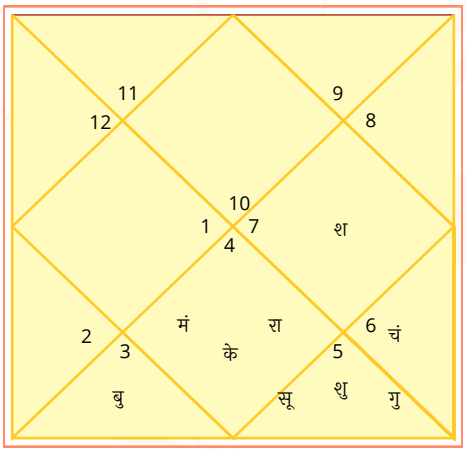

सुख, दुख, वाहन

विशमांश कुंडली

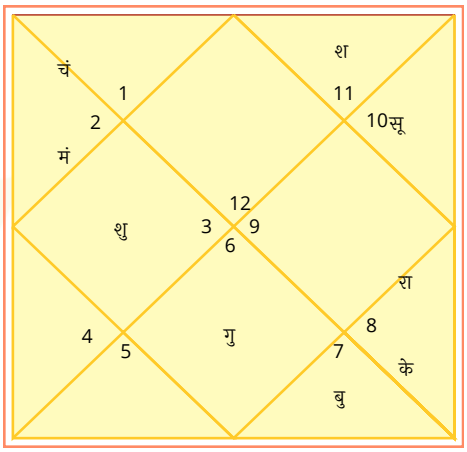

आध्यात्मिक प्रगति एवं पूजा पाठ

चतुर्विंशांश कुंडली

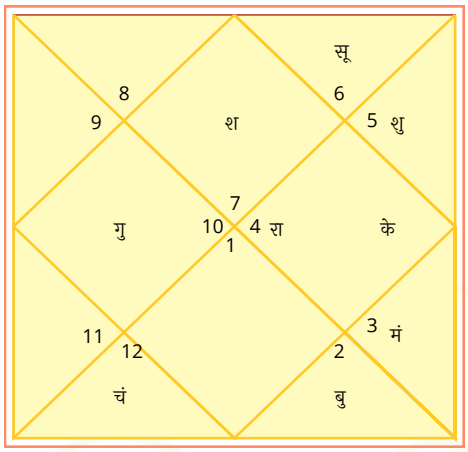

शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षा

भांष कुंडली

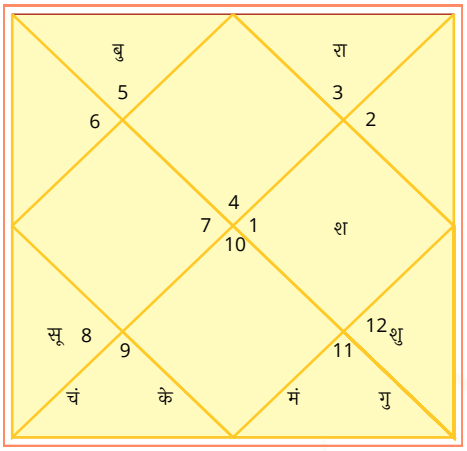

शारीरिक शक्ति, सहनशक्ति

त्रिषमांष कुंडली

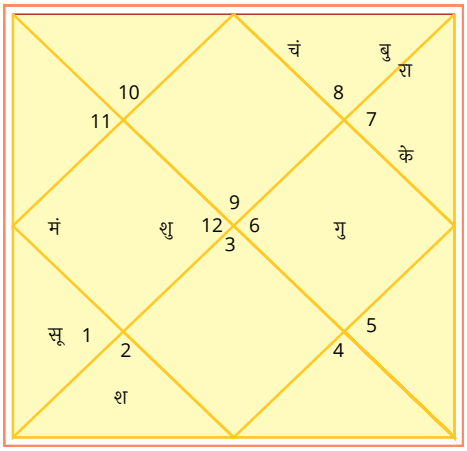

बुराई, विपत्तियां

खवेदांश कुंडली

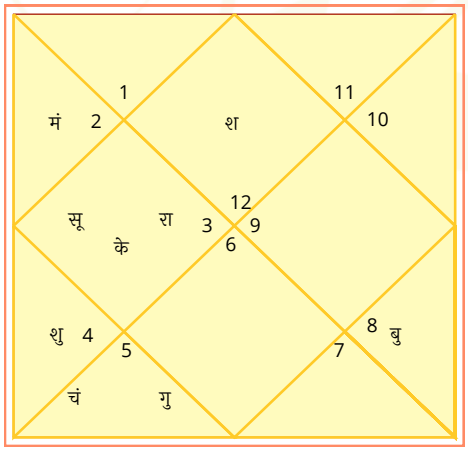

शुभ और अशुभ प्रभाव

अक्षवेदांश कुंडली

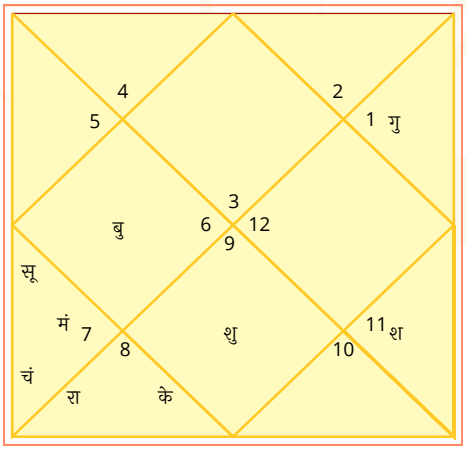

जातक का चरित्र और आचरण

षष्टयांश कुंडली

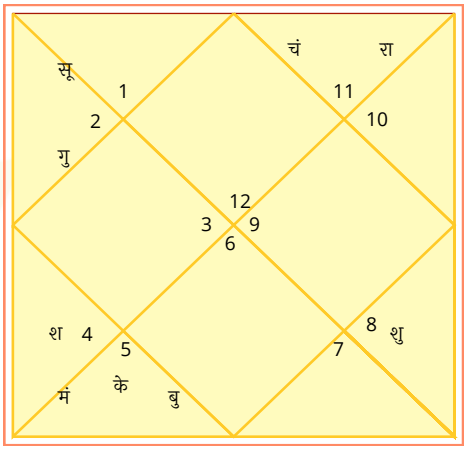

सामान्य खुशियाँ

पंचधा मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	--	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	--	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	--	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	--	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	--	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	--

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	मित्र	--	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	--	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	मित्र	मित्र	मित्र	--	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	--	मित्र	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	--	शत्रु
शनि	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	--

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	सम
चंद्र	अतिमित्र	--	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	--	सम	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	--	शत्रु	अतिमित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिशत्रु	--	सम	मित्र
शुक्र	सम	अतिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	--	सम
शनि	सम	अतिशत्रु	अतिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	सम	--

कृष्णमूर्ति पद्धति ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	भाव
सूर्य	--	कुम्भ	301:49:30	शनि	ग्यारहवाँ
चन्द्र	--	वृश्चिक	235:48:13	मंगल	आठवाँ
मंगल	--	मीन	344:59:03	गुरु	बारहवां
बुध	--	मकर	297:50:53	शनि	दसवां
गुरु	--	मकर	278:04:32	शनि	दसवां
शुक्र	--	मीन	346:26:45	गुरु	बारहवां
शनि	--	वृश्चिक	214:05:39	मंगल	आठवाँ
राहु	हाँ	मेष	29:09:37	मंगल	पहला
केतु	हाँ	तुला	209:09:37	शुक्र	सातवाँ
लग्न	--	मेष	17:42:00	मंगल	पहला

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	चरण	सब	सब-सब
सूर्य	धनिष्ठा	मंगल	3	बुध	शनि
चन्द्र	ज्येष्ठा	बुध	3	राहु	सूर्य
मंगल	उत्तर भाद्रपद	शनि	4	गुरु	गुरु
बुध	धनिष्ठा	मंगल	2	गुरु	राहु
गुरु	उत्तर षाढ़ा	सूर्य	4	शुक्र	शुक्र
शुक्र	उत्तर भाद्रपद	शनि	4	गुरु	राहु
शनि	अनुराधा	शनि	1	शनि	शुक्र
राहु	कृतिका	सूर्य	1	मंगल	चन्द्र
केतु	विशाखा	गुरु	3	सूर्य	शनि
लग्न	भरणी	शुक्र	2	मंगल	शनि

कृष्णमूर्ति पद्धति भाव संधि और कुंडली

भाव	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	सब	सब-सब
1	वृष	41:20:57	शुक्र	रोहिणी	चन्द्र	मंगल	गुरु
2	मिथुन	70:28:31	बुध	आर्द्रा	राहु	शनि	शनि
3	कर्क	95:17:42	चन्द्र	पुष्य	शनि	शनि	गुरु
4	सिंह	120:02:13	सूर्य	मघा	केतु	केतु	केतु
5	सिंह	148:18:30	सूर्य	उत्तर फाल्गुनी	सूर्य	चन्द्र	शुक्र
6	तुला	182:45:42	शुक्र	चित्रा	मंगल	शुक्र	शुक्र
7	वृश्चिक	221:20:57	मंगल	अनुराधा	शनि	चन्द्र	गुरु
8	धनु	250:28:31	गुरु	मूल	राहु	शुक्र	बुध
9	मकर	275:17:42	शनि	उत्तर षाढ़ा	सूर्य	बुध	बुध
10	कुम्भ	300:02:13	शनि	धनिष्ठा	मंगल	बुध	बुध
11	कुम्भ	328:18:30	शनि	पूर्व भाद्रपद	गुरु	शुक्र	शनि
12	मेष	02:45:42	मंगल	अश्विनी	केतु	शुक्र	बुध

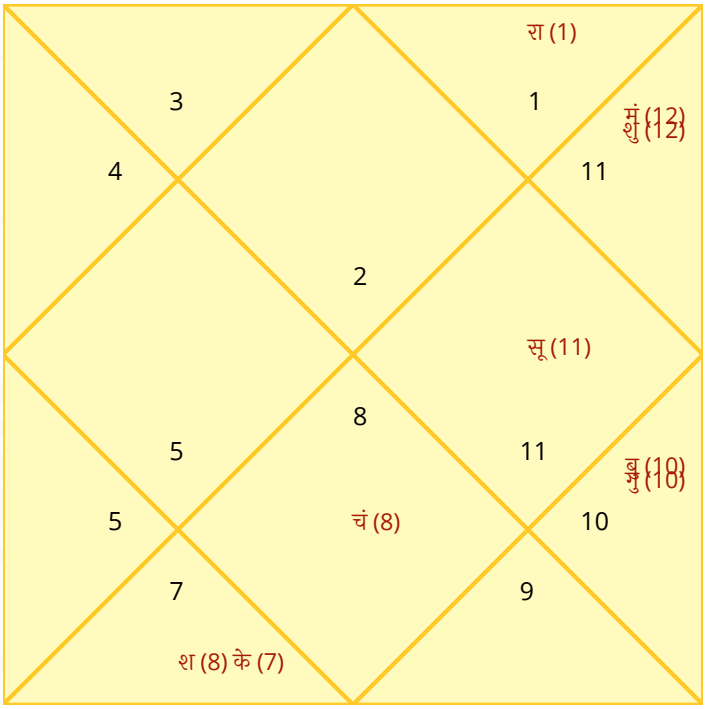

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	1	0	0	0	0	0	2
वृषभ	1	0	0	1	1	0	1	0	4
मिथुन	0	0	1	1	1	0	1	1	5
कर्क	0	0	0	0	0	0	1	1	2
सिंह	1	1	0	0	0	1	1	0	4
कन्या	1	1	1	1	1	1	1	1	8
तुला	1	0	1	1	0	0	0	0	3
वृश्चिक	1	0	1	1	1	0	1	0	5
धनु	1	0	1	1	0	0	1	0	4
मकर	0	1	1	0	0	0	0	1	3
कुंभ	1	0	0	0	0	1	1	1	4
मीन	1	0	1	1	0	0	0	1	4

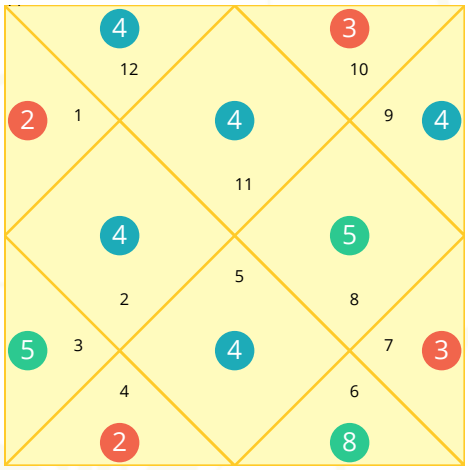

अभिप्राय

पिता

व्यक्तिगत प्रभाव

राजकीय कृपा

सूचक

शुभ

अशुभ

मिश्रित

चंद्र भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	1	1	1	0	1	0	6
वृषभ	0	1	1	1	0	1	0	0	4
मिथुन	0	0	0	0	0	1	0	1	2
कर्क	1	0	1	1	1	1	0	0	5
सिंह	1	1	1	1	1	0	0	0	5
कन्या	1	1	0	0	0	1	1	1	5
तुला	0	0	0	1	1	0	0	0	2
वृश्चिक	1	1	1	1	1	1	0	0	6
धनु	1	0	1	0	1	1	0	0	4
मकर	0	1	1	1	1	1	1	1	7
कुंभ	0	0	0	0	0	0	0	1	1
मीन	0	0	0	1	0	0	1	0	2

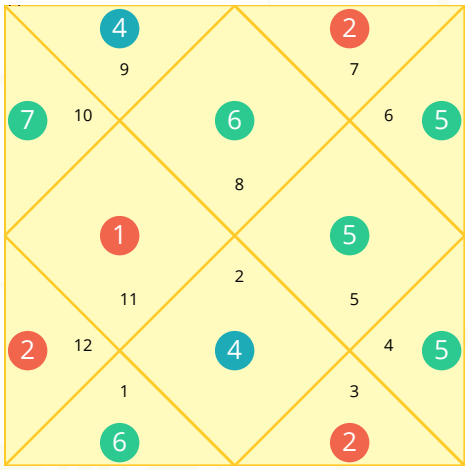

अभिप्राय

माता | मन | भावना | बुद्धि

सूचक

शुभ

अशुभ

मिश्रित

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	1	0	0	0	0	1	4
वृषभ	0	0	0	1	0	0	1	0	2
मिथुन	1	0	1	1	1	0	1	1	6
कर्क	1	0	0	0	0	0	1	0	2
सिंह	0	0	0	0	0	1	1	0	2
कन्या	0	1	1	0	0	0	1	1	4
तुला	0	0	1	0	1	1	0	0	3
वृश्चिक	1	0	0	1	1	0	1	0	4
धनु	1	0	1	0	1	0	0	0	3
मकर	0	1	1	0	0	1	0	1	4
कुंभ	0	0	0	0	0	1	1	1	3
मीन	0	0	1	1	0	0	0	0	2

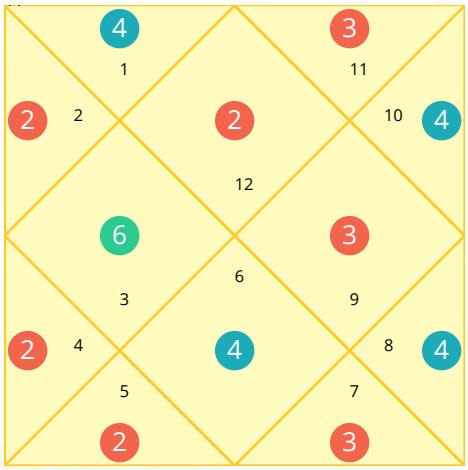

अभिप्राय

भाई-बहन | भूमि-संपत्ति | दुध?टना | विवाद

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	1	0	0	1	0	1	4
वृषभ	0	0	0	1	0	1	1	1	4
मिथुन	1	1	1	1	1	1	1	0	7
कर्क	1	0	0	0	0	1	1	1	4
सिंह	0	1	0	0	1	0	1	0	3
कन्या	0	1	1	1	0	0	1	1	5
तुला	1	0	1	1	0	1	0	0	4
वृश्चिक	0	0	1	1	1	1	1	1	6
धनु	1	1	1	1	1	0	1	0	6
मकर	1	0	1	1	0	1	0	1	5
कुंभ	0	1	0	0	0	0	1	1	3
मीन	0	0	1	1	0	1	0	0	3

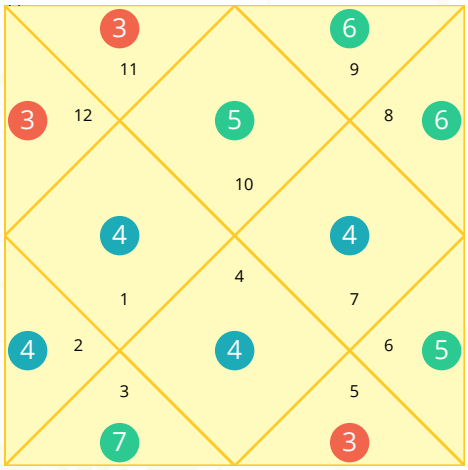

अभिप्राय

रिश्तेदार | वक्तृता | विवेकबुद्धि | शिक्षा

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

गुरु भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	1	1	1	1	1	1	7
वृषभ	1	1	0	1	0	0	0	1	4
मिथुन	0	0	1	1	0	0	0	0	2
कर्क	0	1	0	0	1	1	0	1	4
सिंह	1	0	0	0	1	1	0	1	4
कन्या	1	1	1	1	0	0	0	1	5
तुला	1	0	1	1	1	0	1	1	6
वृश्चिक	1	0	0	1	1	1	0	0	4
धनु	1	1	1	0	0	1	0	1	5
मकर	0	0	1	1	1	1	1	1	6
कुंभ	1	0	0	1	1	0	0	1	4
मीन	1	1	1	0	1	0	1	0	5

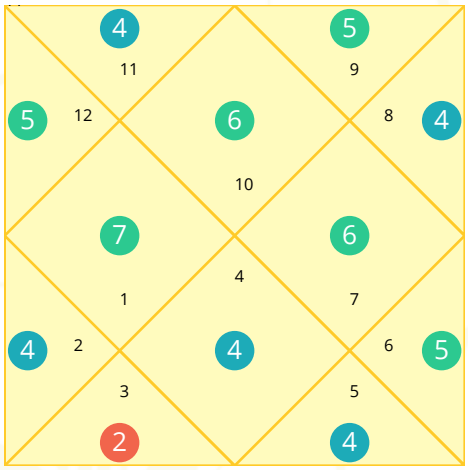

अभिप्राय

संतान | सम्मान | धार्मिक कर्म | सीखना | भाग्य

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	0	0	0	1	0	1	2
वृषभ	0	0	1	1	1	1	0	1	5
मिथुन	0	1	0	1	0	1	1	1	5
कर्क	0	1	1	0	0	1	1	1	5
सिंह	0	0	1	0	1	0	1	1	4
कन्या	1	1	0	1	1	0	1	0	5
तुला	0	1	0	0	1	1	0	0	3
वृश्चिक	0	1	1	1	1	1	0	1	6
धनु	1	1	0	0	0	1	0	1	4
मकर	1	1	1	0	0	1	1	0	5
कुंभ	0	1	1	0	0	0	1	1	4
मीन	0	1	0	1	0	1	1	0	4

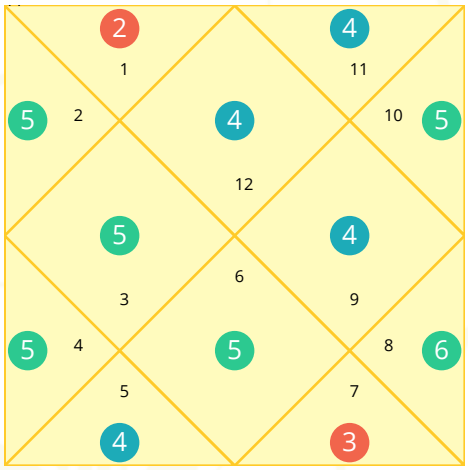

अभिप्राय

पति या पत्नी | विवाह | वाहन | आभूषण

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	0	0	0	0	1	1	3
वृषभ	1	0	1	0	1	0	0	0	3
मिथुन	0	0	0	1	1	0	0	1	3
कर्क	0	0	1	0	0	0	0	1	2
सिंह	1	0	1	1	0	1	0	0	4
कन्या	1	1	0	1	0	0	1	1	5
तुला	0	0	0	1	0	0	0	0	1
वृश्चिक	1	0	0	1	1	0	0	0	3
धनु	1	0	1	1	1	0	0	0	4
मकर	0	1	1	0	0	1	1	1	5
कुंभ	1	0	1	0	0	1	0	1	4
मीन	1	0	0	0	0	0	1	0	2

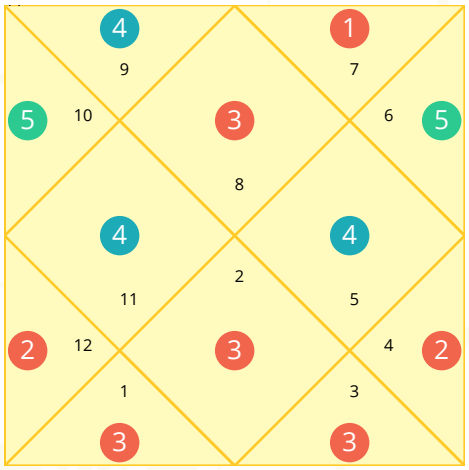

अभिप्राय

कर्मचारी | जीविका | कष्ट व शोक

सूचक

शुभ

अशुभ

मिश्रित

लग्न भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	0	1	1	1	1	0	6
वृषभ	1	0	1	0	1	1	0	0	4
मिथुन	0	0	0	1	1	1	0	1	4
कर्क	1	0	0	0	1	1	0	0	3
सिंह	0	1	1	1	0	0	1	0	4
कन्या	0	1	0	0	1	0	1	1	4
तुला	0	1	0	1	1	1	0	0	4
वृश्चिक	1	0	0	1	1	1	1	0	5
धनु	1	0	1	0	0	0	0	0	2
मकर	1	1	1	1	1	0	1	1	7
कुंभ	0	0	0	1	1	0	1	1	4
मीन	0	0	1	0	0	1	0	0	2

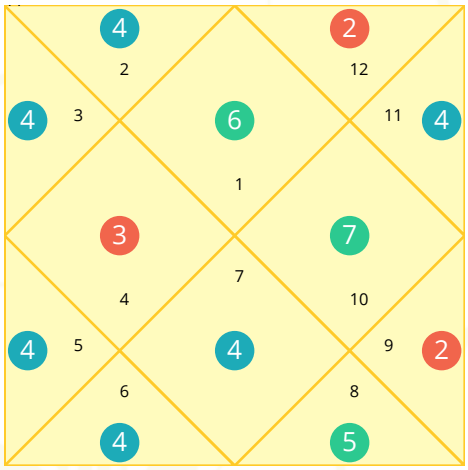

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

सर्वाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	2	6	4	4	7	2	3	0	28
वृषभ	4	4	2	4	4	5	3	0	26
मिथुन	5	2	6	7	2	5	3	0	30
कर्क	2	5	2	4	4	5	2	0	24
सिंह	4	5	2	3	4	4	4	0	26
कन्या	8	5	4	5	5	5	5	0	37
तुला	3	2	3	4	6	3	1	0	22
वृश्चिक	5	6	4	6	4	6	3	0	34
धनु	4	4	3	6	5	4	4	0	30
मकर	3	7	4	5	6	5	5	0	35
कुंभ	4	1	3	3	4	4	4	0	23
मीन	4	2	2	3	5	4	2	0	22

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

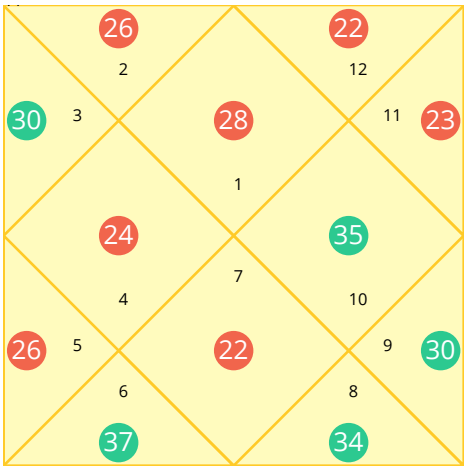

विम्शोत्तरी दशा - I

बुध

22-06-1973 08:13
22-06-1990 14:13

बुध	18-11-1975 23:40
केतु	15-11-1976 04:37
शुक्र	16-09-1979 01:37
सूर्य	22-07-1980 12:43
चन्द्र	21-12-1981 23:13
मंगल	19-12-1982 04:10
राहु	07-07-1985 13:28
गुरु	13-10-1987 11:04
शनि	22-06-1990 14:13

केतु

22-06-1990 14:13
22-06-1997 08:13

केतु	18-11-1990 17:40
शुक्र	18-01-1992 20:40
सूर्य	25-05-1992 16:46
चन्द्र	24-12-1992 18:16
मंगल	22-05-1993 21:43
राहु	10-06-1994 10:01
गुरु	17-05-1995 07:37
शनि	25-06-1996 03:16
बुध	22-06-1997 08:13

शुक्र

22-06-1997 08:13
22-06-2017 08:13

शुक्र	21-10-2000 20:13
सूर्य	22-10-2001 02:13
चन्द्र	22-06-2003 20:13
मंगल	21-08-2004 23:13
राहु	22-08-2007 17:13
गुरु	22-04-2010 17:13
शनि	22-06-2013 08:13
बुध	22-04-2016 05:13
केतु	22-06-2017 08:13

सूर्य

22-06-2017 08:13
22-06-2023 20:13

सूर्य	09-10-2017 22:01
चन्द्र	10-04-2018 13:01
मंगल	16-08-2018 09:07
राहु	11-07-2019 02:31
गुरु	28-04-2020 07:19
शनि	10-04-2021 07:01
बुध	14-02-2022 18:07
केतु	22-06-2022 14:13
शुक्र	22-06-2023 20:13

चन्द्र

22-06-2023 20:13
22-06-2033 08:13

चन्द्र	22-04-2024 05:13
मंगल	21-11-2024 06:43
राहु	23-05-2026 03:43
गुरु	22-09-2027 03:43
शनि	22-04-2029 11:13
बुध	21-09-2030 21:43
केतु	22-04-2031 23:13
शुक्र	21-12-2032 17:13
सूर्य	22-06-2033 08:13

मंगल

22-06-2033 08:13
22-06-2040 02:13

मंगल	18-11-2033 11:40
राहु	06-12-2034 23:58
गुरु	12-11-2035 21:34
शनि	21-12-2036 17:13
बुध	18-12-2037 22:10
केतु	17-05-2038 01:37
शुक्र	17-07-2039 04:37
सूर्य	22-11-2039 00:43
चन्द्र	22-06-2040 02:13

विम्शोत्तरी दशा - II

राहु		गुरु		शनि	
22-06-2040 02:13 22-06-2058 14:13		22-06-2058 14:13 22-06-2074 14:13		22-06-2074 14:13 22-06-2093 08:13	
राहु	05-03-2043 06:25	गुरु	09-08-2060 19:01	शनि	25-06-2077 09:16
गुरु	28-07-2045 20:49	शनि	21-02-2063 02:13	बुध	04-03-2080 12:25
शनि	03-06-2048 19:55	बुध	28-05-2065 23:49	केतु	13-04-2081 08:04
बुध	22-12-2050 05:13	केतु	04-05-2066 21:25	शुक्र	12-06-2084 23:04
केतु	09-01-2052 17:31	शुक्र	02-01-2069 21:25	सूर्य	25-05-2085 22:46
शुक्र	09-01-2055 11:31	सूर्य	22-10-2069 02:13	चन्द्र	25-12-2086 06:16
सूर्य	04-12-2055 04:55	चन्द्र	21-02-2071 02:13	मंगल	03-02-2088 01:55
चन्द्र	04-06-2057 01:55	मंगल	27-01-2072 23:49	राहु	10-12-2090 01:01
मंगल	22-06-2058 14:13	राहु	22-06-2074 14:13	गुरु	22-06-2093 08:13

वर्त्तमान दशा

दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पति तिथि
महादशा	चन्द्र	22-06-2023 20:13	22-06-2033 08:13
अंतर्दशा	राहु	21-11-2024 06:43	23-05-2026 03:43
प्रत्यंतर दशा	केतु	06-10-2025 20:58	07-11-2025 19:59
सूक्ष्म दशा	शुक्र	08-10-2025 17:42	14-10-2025 01:33

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

योगिनी दशा - I

भद्रिका (5 वर्ष)

12-9-1981 9:53
12-9-1986 9:53

भद्रिका	24-5-1982 1:23
उल्का	24-3-1983 10:23
सिद्धि	13-3-1984 12:53
संकटा	23-4-1985 8:53
मंगला	13-6-1985 2:23
पिंगला	22-9-1985 13:23
धान्य	21-2-1986 17:53
भ्रामरी	12-9-1986 9:53

उल्का (6 वर्ष)

12-9-1986 9:53
12-9-1992 9:53

उल्का	12-9-1987 15:53
सिद्धि	11-11-1988 18:53
संकटा	13-3-1990 18:53
मंगला	13-5-1990 15:53
पिंगला	12-9-1990 9:53
धान्य	14-3-1991 0:53
भ्रामरी	12-11-1991 12:53
भद्रिका	12-9-1992 9:53

सिद्धि (7 वर्ष)

12-9-1992 9:53
12-9-1999 9:53

सिद्धि	22-1-1994 13:23
संकटा	13-8-1995 17:23
मंगला	23-10-1995 17:53
पिंगला	13-3-1996 18:53
धान्य	12-10-1996 20:23
भ्रामरी	23-7-1997 22:23
भद्रिका	14-7-1998 0:53
उल्का	12-9-1999 9:53

संकटा (8 वर्ष)

12-9-1999 9:53
12-9-2007 9:53

संकटा	22-6-2001 17:53
मंगला	11-9-2001 21:53
पिंगला	21-2-2002 5:53
धान्य	22-10-2002 17:53
भ्रामरी	12-9-2003 9:53
भद्रिका	22-10-2004 5:53
उल्का	21-2-2006 5:53
सिद्धि	12-9-2007 9:53

मंगला (1 वर्ष)

12-9-2007 9:53
12-9-2008 9:53

मंगला	22-9-2007 13:23
पिंगला	12-10-2007 20:23
धान्य	12-11-2007 6:53
भ्रामरी	22-12-2007 20:53
भद्रिका	11-2-2008 14:23
उल्का	12-4-2008 11:23
सिद्धि	22-6-2008 11:53
संकटा	12-9-2008 9:53

पिंगला (2 वर्ष)

12-9-2008 9:53
12-9-2010 9:53

पिंगला	22-10-2008 23:53
धान्य	22-12-2008 20:53
भ्रामरी	14-3-2009 0:53
भद्रिका	23-6-2009 11:53
उल्का	23-10-2009 5:53
सिद्धि	14-3-2010 6:53
संकटा	23-8-2010 14:53
मंगला	12-9-2010 9:53

योगिनी दशा - II

धान्य (3 वर्ष)

12-9-2010 9:53
12-9-2013 9:53

धान्य	12-12-2010 17:23
भ्रामरी	13-4-2011 11:23
भद्रिका	12-9-2011 15:53
उल्का	13-3-2012 6:53
सिद्धि	12-10-2012 8:23
संकटा	12-6-2013 20:23
मंगला	13-7-2013 6:53
पिंगला	12-9-2013 9:53

भ्रामरी (4 वर्ष)

12-9-2013 9:53
12-9-2017 9:53

भ्रामरी	21-2-2014 17:53
भद्रिका	12-9-2014 15:53
उल्का	14-5-2015 3:53
सिद्धि	22-2-2016 5:53
संकटा	11-1-2017 21:53
मंगला	21-2-2017 11:53
पिंगला	13-5-2017 15:53
धान्य	12-9-2017 9:53

भद्रिका (5 वर्ष)

12-9-2017 9:53
12-9-2022 9:53

भद्रिका	24-5-2018 1:23
उल्का	24-3-2019 10:23
सिद्धि	13-3-2020 12:53
संकटा	23-4-2021 8:53
मंगला	13-6-2021 2:23
पिंगला	22-9-2021 13:23
धान्य	21-2-2022 17:53
भ्रामरी	12-9-2022 9:53

उल्का (6 वर्ष)

12-9-2022 9:53
12-9-2028 9:53

उल्का	12-9-2023 15:53
सिद्धि	11-11-2024 18:53
संकटा	13-3-2026 18:53
मंगला	13-5-2026 15:53
पिंगला	12-9-2026 9:53
धान्य	14-3-2027 0:53
भ्रामरी	12-11-2027 12:53
भद्रिका	12-9-2028 9:53

सिद्धि (7 वर्ष)

12-9-2028 9:53
12-9-2035 9:53

सिद्धि	22-1-2030 13:23
संकटा	13-8-2031 17:23
मंगला	23-10-2031 17:53
पिंगला	13-3-2032 18:53
धान्य	12-10-2032 20:23
भ्रामरी	23-7-2033 22:23
भद्रिका	14-7-2034 0:53
उल्का	12-9-2035 9:53

संकटा (8 वर्ष)

12-9-2035 9:53
12-9-2043 9:53

संकटा	22-6-2037 17:53
मंगला	11-9-2037 21:53
पिंगला	21-2-2038 5:53
धान्य	22-10-2038 17:53
भ्रामरी	12-9-2039 9:53
भद्रिका	22-10-2040 5:53
उल्का	21-2-2042 5:53
सिद्धि	12-9-2043 9:53

योगिनी दशा - III

मंगला (1 वर्ष)

12-9-2043 9:53
12-9-2044 9:53

मंगला	22-9-2043 13:23
पिंगला	12-10-2043 20:23
धान्य	12-11-2043 6:53
भ्रामरी	22-12-2043 20:53
भद्रिका	11-2-2044 14:23
उल्का	12-4-2044 11:23
सिद्धि	22-6-2044 11:53
संकटा	12-9-2044 9:53

पिंगला (2 वर्ष)

12-9-2044 9:53
12-9-2046 9:53

पिंगला	22-10-2044 23:53
धान्य	22-12-2044 20:53
भ्रामरी	14-3-2045 0:53
भद्रिका	23-6-2045 11:53
उल्का	23-10-2045 5:53
सिद्धि	14-3-2046 6:53
संकटा	23-8-2046 14:53
मंगला	12-9-2046 9:53

धान्य (3 वर्ष)

12-9-2046 9:53
12-9-2049 9:53

धान्य	12-12-2046 17:23
भ्रामरी	13-4-2047 11:23
भद्रिका	12-9-2047 15:53
उल्का	13-3-2048 6:53
सिद्धि	12-10-2048 8:23
संकटा	12-6-2049 20:23
मंगला	13-7-2049 6:53
पिंगला	12-9-2049 9:53

भ्रामरी (4 वर्ष)

12-9-2049 9:53
12-9-2053 9:53

भ्रामरी	21-2-2050 17:53
भद्रिका	12-9-2050 15:53
उल्का	14-5-2051 3:53
सिद्धि	22-2-2052 5:53
संकटा	11-1-2053 21:53
मंगला	21-2-2053 11:53
पिंगला	13-5-2053 15:53
धान्य	12-9-2053 9:53

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

चर दशा

मेष (11 वर्ष)

14-2-1985
14-2-1996

वृष	14-1-1986
मिथुन	14-12-1986
कर्क	14-11-1987
सिंह	14-10-1988
कन्या	14-9-1989
तुला	14-8-1990
वृश्चिक	14-7-1991
धनु	14-6-1992
मकर	14-5-1993
कुम्भ	14-4-1994
मीन	14-3-1995
मेष	14-2-1996

वृष (10 वर्ष)

14-2-1996
14-2-2006

मेष	14-12-1996
मीन	14-10-1997
कुम्भ	14-8-1998
मकर	14-6-1999
धनु	14-4-2000
वृश्चिक	14-2-2001
तुला	14-12-2001
कन्या	14-10-2002
सिंह	14-8-2003
कर्क	14-6-2004
मिथुन	14-4-2005
वृष	14-2-2006

मिथुन (7 वर्ष)

14-2-2006
14-2-2013

वृष	14-9-2006
मेष	14-4-2007
मीन	14-11-2007
कुम्भ	14-6-2008
मकर	14-1-2009
धनु	14-8-2009
वृश्चिक	14-3-2010
तुला	14-10-2010
कन्या	14-5-2011
सिंह	14-12-2011
कर्क	14-7-2012
मिथुन	14-2-2013

कर्क (8 वर्ष)

14-2-2013
14-2-2021

मिथुन	14-10-2013
वृष	14-6-2014
मेष	14-2-2015
मीन	14-10-2015
कुम्भ	14-6-2016
मकर	14-2-2017
धनु	14-10-2017

सिंह (6 वर्ष)

14-2-2021
14-2-2027

कन्या	14-8-2021
तुला	14-2-2022
वृश्चिक	14-8-2022
धनु	14-2-2023
मकर	14-8-2023
कुम्भ	14-2-2024
मीन	14-8-2024

कन्या (8 वर्ष)

14-2-2027
14-2-2035

तुला	14-10-2027
वृश्चिक	14-6-2028
धनु	14-2-2029
मकर	14-10-2029
कुम्भ	14-6-2030
मीन	14-2-2031
मेष	14-10-2031

वृश्चिक	14-6-2018
तुला	14-2-2019
कन्या	14-10-2019
सिंह	14-6-2020
कर्क	14-2-2021

मेष	14-2-2025
वृष	14-8-2025
मिथुन	14-2-2026
कर्क	14-8-2026
सिंह	14-2-2027

वृष	14-6-2032
मिथुन	14-2-2033
कर्क	14-10-2033
सिंह	14-6-2034
कन्या	14-2-2035

तुला (5 वर्ष)

14-2-2035
14-2-2040

वृश्चिक	14-7-2035
धनु	14-12-2035
मकर	14-5-2036
कुम्भ	14-10-2036
मीन	14-3-2037
मेष	14-8-2037
वृष	14-1-2038
मिथुन	14-6-2038
कर्क	14-11-2038
सिंह	14-4-2039
कन्या	14-9-2039
तुला	14-2-2040

वृश्चिक (11 वर्ष)

14-2-2040
14-2-2051

तुला	14-1-2041
कन्या	14-12-2041
सिंह	14-11-2042
कर्क	14-10-2043
मिथुन	14-9-2044
वृष	14-8-2045
मेष	14-7-2046
मीन	14-6-2047
कुम्भ	14-5-2048
मकर	14-4-2049
धनु	14-3-2050
वृश्चिक	14-2-2051

धनु (1 वर्ष)

14-2-2051
14-2-2052

वृश्चिक	14-3-2051
तुला	14-4-2051
कन्या	14-5-2051
सिंह	14-6-2051
कर्क	14-7-2051
मिथुन	14-8-2051
वृष	14-9-2051
मेष	14-10-2051
मीन	14-11-2051
कुम्भ	14-12-2051
मकर	14-1-2052
धनु	14-2-2052

मकर (2 वर्ष)

14-2-2052
14-2-2054

धनु	14-4-2052
वृश्चिक	14-6-2052
तुला	14-8-2052
कन्या	14-10-2052

कुम्भ (10 वर्ष)

14-2-2054
14-2-2064

मीन	14-12-2054
मेष	14-10-2055
वृष	14-8-2056
मिथुन	14-6-2057

मीन (2 वर्ष)

14-2-2064
14-2-2066

मेष	14-4-2064
वृष	14-6-2064
मिथुन	14-8-2064
कर्क	14-10-2064

सिंह	14-12-2052	कर्क	14-4-2058	सिंह	14-12-2064
कर्क	14-2-2053	सिंह	14-2-2059	कन्या	14-2-2065
मिथुन	14-4-2053	कन्या	14-12-2059	तुला	14-4-2065
वृष	14-6-2053	तुला	14-10-2060	वृश्चिक	14-6-2065
मेष	14-8-2053	वृश्चिक	14-8-2061	धनु	14-8-2065
मीन	14-10-2053	धनु	14-6-2062	मकर	14-10-2065
कुम्भ	14-12-2053	मकर	14-4-2063	कुम्भ	14-12-2065
मकर	14-2-2054	कुम्भ	14-2-2064	मीन	14-2-2066

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

कालसर्प दोष

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता कही जायेगी। कालसर्प दोष कुंडली में ख़राब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्ध योग भी बन सकता है।

अनन्त	कुलिक	वासुकी	शंखपाल
पद्म	महापद्म	तक्षक	कर्कोटक
शंखचूड़	घातक	विषधर	शेषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष

कालसर्प की उपस्थिति

आपकी जन्मपत्रिका में कालसर्प दोष उदित रूप में विद्यमान है।

आपकी कुंडली में कालसर्प दोष पूर्ण रूप से विद्यमान एवं प्रबल है।

कालसर्प नाम

अनन्त

दिशा

पूर्ण उदित

कालसर्प दोष फल

आपकी जन्मपत्रिका में अनंत नामक कालसर्प योग बन रहा है।
ऐसे जातकों के व्यक्तित्व निर्माण में कठिन परिश्रम की जरूरत पड़ती है। उसके विद्यार्जन व व्यवसाय के काम बहुत सामान्य ढंग से चलते हैं और इन क्षेत्रों में थोड़ा भी आगे बढ़ने के लिए जातक को कठिन संघर्ष करना पड़ता है। मानसिक पीड़ा कभी-कभी उसे घर- गृहस्थी छोड़कर वैरागी जीवन अपनाने के लिए भी उकसाया करती हैं। शारीरिक रूप से उसे अनेक व्याधियों का सामना करना पड़ता है। उसकी आर्थिक स्थिति बहुत ही डांवाडोल रहती है। फलस्वरूप उसकी मानसिक व्यग्रता उसके वैवाहिक जीवन में भी जहर घोलने लगती है। जातक को माता-पिता के स्नेह व संपत्ति से भी वंचित रहना पड़ता है। उसके निकट संबंधी भी नुकसान पहुंचाने से बाज नहीं आते।

कालसर्प दोष के उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।

- हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

- गृह में मयूर (मोर) पंख रखें ।

- शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

- विद्यार्थीजन सरस्वती जी के बीज मंत्रों का एक वर्ष तक जाप करें और विधिवत उपासना करें।

- राहु की दशा आने पर प्रतिदिन एक माला राहु मंत्रा का जाप करें और जब जाप की संख्या 18 हजार हो जाये तो राहु की मुख्य समिधा दुर्वा से पूर्णाहुति हवन कराएं और किसी गरीब को उड़द व नीले वस्त्रा का दान करें

- महामृत्युंजय मंत्रों का जाप प्रतिदिन 11 माला रोज करें, जब तक राहु केतु की दशा-अंर्तदशा रहे और हर शनिवार को श्री शनिदेव का तैलाभिषेक करें और मंगलवार को हनुमान जी को चौला चढ़ायें।

- शुभ मुहूर्त में सर्वतोभद्रमण्डल यंत्रा को पूजित कर धारण करें।

- श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें।

- एक वर्ष तक गणपति अथर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।

- श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्नानोपरांत 11 माला 'नम: शिवाय' मंत्रा का जप करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें।

मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते है। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	31.5%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है और प्रभावी है, मिलान के समय इसका ध्यान रखे। आप मांगलिक हैं ।

मांगलिक विश्लेषण - II

भाव के आधार पर

राहु आपके कुंडली में लग्न भाव में है।

केतु आपके कुंडली में सप्तम भाव में है।

शनि अष्टम भाव में आपके कुंडली में स्थित है।

द्वादश भाव में मंगल अवस्थित है।

दृष्टि के आधार पर

आपकी कुंडली में लग्न भाव को केतु देख रहा है।

शनि की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

सप्तम भाव मंगल से दृष्ट है।

सप्तम भाव राहु से दृष्ट है।

सूर्य , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

शनि , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

राहु , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

मांगलिक दोष के उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है |

- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है |

- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं |

- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है |

- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है |

- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुशप्रभाव में लाभ मिलता है |

- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें |

- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें |

पितृ दोष फल

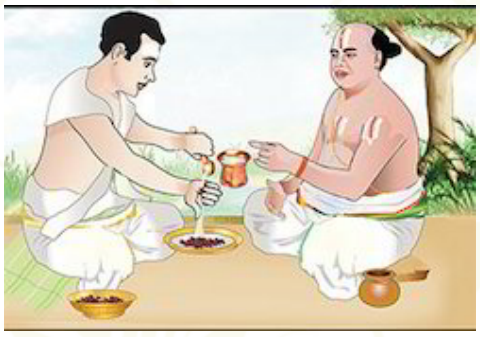

पितृ दोष क्या होता है ?

पितृ दोष पूर्वजों की एक कार्मिक ऋण है और ग्रहों के संयोजन के रूप में जन्म कुंडली में परिलक्षित होता है। यह पूर्वजों की उपेक्षा के कारण भी होता है और श्राद्ध या दान या आध्यात्मिक उत्थान का यथोचित प्रबंध न करने के कारण भी पितृ दोष हो सकता है।

पितृ दोष विश्लेषण

क्या पितृ दोष आपकी कुंडली में उपस्थित है ? **हाँ**

आपकी जन्मपत्रिका में पितृ दोष उपस्थित है क्योकि इससे सम्बंधित 1 नियमों का सयोंजन आपकी कुंडली में हो रहा है। पितृ दोष का शमन इसके उपायो को करके किया जा सकता है अतः चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है।

नियम जिनके द्वारा आपकी कुंडली में पितृ दोष की उपस्थिति

- चन्द्र व राहु और/ या राहु एवं शनि की युति से भी पितृ दोष होता है।

पितृ दोष के प्रभाव

- पितृ दोष के प्रभाव निम्नलिखित है -
- पितृ दोष से परिवार में प्रतिकूल वातावरण पैदा होती हैं।
- यह शादी में देरी होने और असफल विवाह में भी कारण होती है ।
- पितृ दोष भी परिवार में दुर्घटनाओं या अवांछित घटनाओं का कारण बन सकता है।
- इसके साथ शिक्षा के क्षेत्र में देरी या अवरोधों को पैदा कर सकता है या आपको कभी न खत्म होने वाला कर्ज जैसी परिस्थिति में पहुंचा सकता है ।
- विरासत में मिला रोग और लम्बी बीमारी पितृ दोष के बुरे प्रभावों में से एक है।

पितृ दोष उपाय

- पितृ दोष शांत करने के उपाय निम्नलिखित है -

- अपने माता -पिता , भाई-बहन की हरसंभव सेवा करे।

- पीपल और बरगद के वृक्ष की पूजा करने से पितृ दोष की शान्ति होती है या पीपल का पेड़ किसी नदी के किनारे लगायें और पूजा करें, इसके साथ ही सोमवती अमावस्या को दूध की खीर बना, पितरों को अर्पित करने से भी इस दोष में कमी होती है या फिर प्रत्येक अमावस्या को एक ब्राह्मण को भोजन कराने व दक्षिणा वस्त्र भेंट करने से पितृ दोष कम होता है

- प्रत्येक अमावस्या को कंडे की धूनी लगाकर उसमें खीर का भोग लगाकर दक्षिण दिशा में पितरों का आव्हान करने व उनसे अपने कर्मों के लिये क्षमायाचना करने से भी लाभ मिलता है

- पितृ दोष निवारण हेतु पितृ पक्ष में त्रिपिंडी श्राद्ध करें।

- ऊँ नवकुल नागाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्प प्रचोदयात् – "की एक रुद्राक्ष माला जप प्रतिदिन करें।

- घर एवं कार्यालय, दुकान पर मोर पंख लगावें।

- शनि के दिन ताजी मूली का दान करें। कोयले, बहते जल में प्रवाहित करें।

- सोमवती अमावस्या के दिन पितृ दोष निवारण पूजा करने से भी पितृ दोष में लाभ मिलाता है

- सूर्योदय के समय किसी आसन पर खड़े होकर सूर्य को निहारने, उससे शक्ति देने की प्रार्थना करने और गायत्री मंत्र का जाप करने से भी सूर्य मजबूत होता है

- भगवान शंकर की प्रतिदिन पूजा एवं आराधना करने से भी पितृ दोष की शांति होती है।

साढ़ेसाती क्या होता है

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढ़ाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है। सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छ: मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं हैं। इसमे कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी, अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

क्या आप साढ़ेसाती में है

साढ़ेसाती दोष उपस्थित नहीं है।

नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।

विचार करने का दिनाकं	13-10-2025
शनि राशि	मीन
चंद्र राशि	वृश्चिक
वक्री शनि	हाँ

साढ़ेसाती विश्लेषण - II

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्री शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
वृश्चिक	वृश्चिक	हाँ	उदय प्रारम्भ	1-6-1985	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	वृश्चिक	--	शिखर प्रारम्भ	17-9-1985	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृश्चिक	धनु	--	अस्त प्रारम्भ	17-12-1987	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृश्चिक	मकर	--	अस्त समाप्त	21-3-1990	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृश्चिक	मकर	हाँ	अस्त प्रारम्भ	20-6-1990	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृश्चिक	मकर	--	अस्त समाप्त	15-12-1990	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृश्चिक	तुला	--	उदय प्रारम्भ	15-11-2011	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	तुला	हाँ	उदय समाप्त	16-5-2012	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृश्चिक	तुला	--	उदय प्रारम्भ	4-8-2012	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	वृश्चिक	--	शिखर प्रारम्भ	2-11-2014	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृश्चिक	धनु	--	अस्त प्रारम्भ	27-1-2017	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृश्चिक	धनु	हाँ	शिखर प्रारम्भ	21-6-2017	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृश्चिक	धनु	--	अस्त प्रारम्भ	26-10-2017	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृश्चिक	मकर	--	अस्त समाप्त	24-1-2020	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृश्चिक	तुला	--	उदय प्रारम्भ	28-1-2041	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	तुला	हाँ	उदय समाप्त	6-2-2041	साढ़ेसाती के उदय चरण के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृश्चिक	तुला	--	उदय प्रारम्भ	26-9-2041	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	वृश्चिक	--	शिखर प्रारम्भ	12-12-2043	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृश्चिक	वृश्चिक	हाँ	उदय प्रारम्भ	23-6-2044	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	वृश्चिक	--	शिखर प्रारम्भ	30-8-2044	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृश्चिक	धनु	--	अस्त प्रारम्भ	8-12-2046	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।

Ujjain, Madhya Pradesh

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्री शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
वृश्चिक	मकर	--	अस्त समाप्त	6-3-2049	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृश्चिक	मकर	हाँ	अस्त प्रारम्भ	9-7-2049	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृश्चिक	मकर	--	अस्त समाप्त	4-12-2049	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृश्चिक	तुला	--	उदय प्रारम्भ	4-11-2070	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	वृश्चिक	--	शिखर प्रारम्भ	5-2-2073	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृश्चिक	वृश्चिक	हाँ	उदय प्रारम्भ	30-3-2073	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	वृश्चिक	हाँ	उदय प्रारम्भ	1-4-2073	साढ़ेसाती के उदय चरण का प्रारम्भ हो रहा है।
वृश्चिक	वृश्चिक	--	शिखर प्रारम्भ	23-10-2073	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृश्चिक	धनु	--	अस्त प्रारम्भ	16-1-2076	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृश्चिक	धनु	हाँ	शिखर प्रारम्भ	10-7-2076	साढ़ेसाती का उच्चतम चरण का प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ उदय चरण का अंत।
वृश्चिक	धनु	--	अस्त प्रारम्भ	12-10-2076	साढ़ेसाती के अस्त चरण का प्रारम्भ एवं उच्चतम चरण का अंत हो रहा है।
वृश्चिक	मकर	--	अस्त समाप्त	14-1-2079	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।
वृश्चिक	मकर	--	अस्त समाप्त	15-1-2079	साढ़ेसाती के अस्त चरण के अंत के साथ साथ साढ़ेसाती का भी अंत हो रहा है।

साढ़े सती उपाय

- साढ़ेसाती के अनिष्ट प्रभावों को काम करने के उपाय निम्नलिखित है -

- साढ़े साती की परेशानी से बचने के लिए नियमित हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।

- इस ग्रह दशा से बचने के लिए काले घोड़े की नाल की अंगूठी बनाकर उसे दाएं हाथ की मध्यमा उंगली में पहनना चाहिए।

- शनि देव को शनिवार के दिन सरसों का तेल और तांबा भेट करना चाहिए।

- किसी गरीब व्यक्ति को काले कंबल का दान करें।

- शिवलिंग पर काले तिल अर्पित करें और जल चढ़ाएं।

- हर मंगलवार और शनिवार ऊँ रामदूताय नमः मंत्र का जप करें। मंत्र जप की संख्या कम से कम 108 करे।

- धार्मिक आचरण बनाए रखें और किसी का अनादर न करें।

- हर शनिवार को शनि के निमित्त तेल का दान करें। तेल दान करने से पहले तेल में अपना चेहरा देख लेना चाहिए। यह उपाय हर शनिवार किया जाना चाहिए।

- शनि बीज मंत्र - ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः प्रतिदिन 108 बार अवश्य करें

- शनि प्रकोप से मुक्ति के लिए सुंदर काण्ड का नियमित पाठ अवश्य करें।

- रोटी में तेल लगाकर कुत्ते या कौए को खिलाएं।

रत्न उपाय विचार

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्तिथि के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं । प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है । रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं । ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं; इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है ।

जीवन रत्न

मूंगा

लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है । इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है । इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए ।

कारक रत्न

माणिक्य

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का द्योतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है । इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं । पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न

पुखराज

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है । यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का द्योतक है । यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है । नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं । इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है ।

जीवन रत्न - मूंगा

विकल्प	लाल सुलेमानी	दिन	मंगलवार
उंगली	तर्जनी	अधिदेवता	मंगल
भार	6 - 10.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

लाल मूंगा का स्वामी ग्रह मंगल है । लाल मूंगा व्यक्ति को साहसी बनाता है और उसकी अपने दुश्मनों को पछाड़ने में सहायता करता है । लाल मूंगा दुष्ट आत्माओं, जादू-टोना और बुरे स्वप्नों से बचाता है ।

भार व धातु

लाल मूंगा का वजन ६ कैरेट से अधिक होना चाहिए । इसे सोने और तांबे के मिश्रण से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

लाल मूंगा रत्न चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी मंगलवार को सूर्योदय के एक घंटे बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । लाल मूंगा धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

लाल मूंगा की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, लाल मूंगे की अंगूठी को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें ।

विकल्प

लाल मूंगा के स्थान पर संग मुंगी (संग-सितारा), कार्नेलियन और रेड जास्पर (सूर्यकांत मणि) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि लाल मूंगे को पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

कारक रत्न - माणिक्य

विकल्प	लाल गार्नेट	दिन	रविवार
उंगली	अनामिका	अधिदेवता	सूर्य
भार	3 - 4.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

माणिक रत्न का स्वामी ग्रह सूर्य है । शुद्ध माणिक दोषरहित , चमकदार, दीप्तिमान, स्पर्श करने में चिकना और उत्तम वर्ण का होता हैं । माणिक धारण करने से उत्तम धन और संपत्ति की प्राप्ति होती है । इससे इच्छा शक्ति और आत्मा को प्रबलता मिलती है । माणिक धारण करने वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है और समाज में उच्च तथा प्रतिष्ठित पद पर विराजमान होता है।

भार व धातु

वजन में कम से कम २ -१/२ कैरेट का दोषरहित माणिक पहना जाना चाहिए । सोने और तांबे के मिश्रण से बनी अंगूठी में रत्न को जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

माणिक रत्न को चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी रविवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । माणिक धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ सूर्याय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, माणिक को अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण किया जा सकता है ।

विकल्प

माणिक के स्थान पर लाल स्पिनेल, स्टार रूबी, पाइरप गार्नेट(तामड़ा), लाल ज़िर्कन या लाल तूरमली जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि माणिक को हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

भाग्य रत्न - पुखराज

विकल्प	टोपाज	दिन	गुरुवार
उंगली	तर्जनी	अधिदेवता	गुरु
भार	4 - 5.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

पुखराज रत्न का स्वामी ग्रह बृहस्पति (गुरु) है । शुद्ध पुखराज दोषरहित , चमकदार, दीप्तिमान, स्पर्श करने में चिकना और उत्तम वर्ण का होता हैं । पुखराज धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, ज्ञान, संपत्ति, दीर्घायु, नाम, सम्मान और यश की प्राप्ति होती है । यह बुरी आत्माओं के कुप्रभाव से भी रक्षा करता है ।

भार व धातु

पुखराज का वजन ३ कैरेट से अधिक होना चाहिए; परंतु ६, ११ अथवा १५ कैरेट का न हो इस बात का ध्यान रखें । इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

पुखराज रत्न को चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरुवार की सुबह धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । पुखराज धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः

प्राण प्रतिष्ठा

पुखराज की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, पुखराज को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें ।

विकल्प

पुखराज के स्थान पर पीला मोती, पीला जिक्रोन, पीली तूरमली, टोपाज़ और सिट्रीन (क्वार्ट्ज टोपाज़) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि पुखराज को हीरे, नीलम, गोमेद और लहसुनिया के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

नौ मुखी रुद्राक्ष

आपको नौ मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की सलाह दी जाती है।

इसका स्वामी ग्रह केतु है। नौ मुखी रुद्राक्ष, दुर्गा देवी (शक्ति) का रूप है। यह आत्म-शक्ति बढ़ाता है। यह मुखी रुद्राक्ष केतु के दुष्प्रभावों को कम करने के लिए फायदेमंद है। केतु; फेफड़े, बुखार, आंखों के दर्द, आंत्र दर्द, त्वचा रोग, शरीर में दर्द आदि की बीमारियों को जन्म देता है। यह मन की शांति के लिए एकाग्रता और आध्यात्मिक जागृति के लिए उपयोगी है। यह धैर्य पैदा करने में मदद करता है, अनावश्यक क्रोध को नियंत्रित करने और निडरता की भावना को नियंत्रित करता है। यह माँ शक्ति को बहुत प्रिय है और देवी के भक्त द्वारा पहना जाता है। यह गर्दन पर या दाहिने हाथों पर पहना जा सकता है।

शुभाशुभ अंक

3	5	7
भाग्यांक	मूलांक	नामांक

आपका नाम	priti
जन्म दिनांक	14-2-1985
मूलांक	5
मूलांक स्वामी	बुद्ध
मित्र अंक	5,3,9
सम अंक	1,6,7,8
शत्रु अंक	2,4
शुभ दिन	गुरुवार, बुधवार, शुक्रवार
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	ओनिक्स,पेरिडॉट
शुभ देवता	श्री लक्ष्मी नारायण
शुभ धातु	सोना
शुभ रंग	Green
शुभ मंत्र	|| ओम बुंग बुधाय नमः ||

आपके बारे में

आपका मूलांक पाँच है। इसका स्वामी बुध ग्रह है। मूलांक पाँच के प्रभाववश आप रोजगार के क्षेत्र में नौकरी की अपेक्षा व्यापार के मार्ग की ओर अधिक आकृष्ट रहेंगे। यदि आप नौकरी का मार्ग चुनते हैं तो ऐसा रोजगार आपको अधिक पसन्द आयेगा। जहाँ लेन-देन, लेखा, यांत्रिकी, वाणिज्य, इत्यादि का कार्य होता हो। कम्पनी, फैक्ट्री, उच्च व्यापार जगत आपको रास आयेगा। बुधग्रह के प्रभाववश आपके अन्दर वाक्पटुता, तर्कशक्ति अच्छी रहेगी एवं सामने वाले व्यक्ति को आप अपनी बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। आप हर कार्य को जल्दी समाप्त करना पसन्द करेंगे एवं ऐसे रोजगार की ओर उन्मुख होंगे जिसमें शीघ्र सफलता कम मेहनत तथा अधिक लाभ पर प्राप्त होती रहे। आप थोड़े जल्दबाज एवं फुर्तीले भी रहेंगे। जल्दबाजी के चक्कर में आप कभी-कभी हानियों का भी सामना करेंगे। आपकी मानसिक स्थिति चंचल होने से आपको शीघ्र क्रोध आ जाया करेगा एवं कभी-कभी चिड़चिड़ाहट भी रहा करेगी। आप अधिकांशतः बुद्धि जनित कार्यों में रुचि लेंगे। इस कारण आपकी दिमागी ताकत अधिक खर्च होने से अधिक आयु में आपको स्नायुवेग द्वारा उत्पन्न रोगों का भी सामना करना पड़ेगा। मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से कमोवेश बुध के गुण-अवगुण आपके अन्दर आयेंगे। विद्याध्यन लेखन-पठन की ओर आपकी विशेष रुचि रहेगी।

शुभ व्रत समय

बुधवार को बुध अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। पैंतालीस या सत्रह बुधवारों को यह व्रत करें। हरे रंग के कपड़े पहनें एवं हरे पदार्थों का दान करें। तुलसी के पत्ते खाना एवं चढ़ाना लाभप्रद रहता है। पन्ना या मरगज की माला पर बुध मंत्र का जप करें।

शुभ देवता

आप बुध ग्रह की उपासना करें भगवान लक्ष्मी नारायण की आराधना करें। भगवान लक्ष्मी नारायण के चतुर्दषाक्षरी मंत्र "ओम् ह्रीं ह्रीं श्री श्री्र लक्ष्मी वासुदेवाय नमः" का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो आप विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान लक्ष्मी नारायण के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्षन कर लिया करें।

शुभ गायत्री मंत्र

आपके लिए बुध के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु बुध के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा। बुध गायत्री मंत्र - ||ऊँ सौम्यरुपाय विüहे बाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात्।। ||

शुभ ध्यान समय

प्रातःकाल उठ कर आप बुध का ध्यान करें, मन में बुध की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें। प्रियंगुकलिकाश्यामं रुपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

शुभ मंत्र

अशुभ बुध को अनुकूल बनाने हेतु बुध के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान नब्बे माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे। ऊँ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।। जप संख्या 9000।।

आपके के लिए शुभ समय

बुध दिनांक 22 मई से 21 जून एवं 24 अगस्त से 23 सितंबर तक, पाश्चात्य मत से, सूर्य मिथुन एवं कन्या राशि में रहता है तथा भारतीय मतानुसार 15 जून से 15 जुलाई तक एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर तक सूर्य मिथुन तथा कन्या राशि में रहता है। मिथुन बुध की स्वराशि तथा कन्या उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक पांच के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

शुभ वास्तु

आपके लिए उपयुक्त दिशा उत्तर है। इसलिए आपके लिए ऐसा मकान या फ्लैट शुभ रहेगा जिसका मूलांक तथा नामांक 5 हो। उत्तर दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। रहेगी। आप अपने घर की बैठक उत्तर दिशा में ही करें एवं घर के फर्नीचर आदि का रंग खाकी, सफेद चमकीला होना चाहिए, जो आपके लिए अच्छे फल देने वाले होंगे।

लग्न फल - मेष

स्वामी	मंगल
प्रतीक	भेड़
विशेषताएँ	अग्नि तत्त्व, चर, पूर्व
भाग्यशाली रत्न	पुखराज
व्रत का दिन	मंगलवार

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् |
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत ||

मेष लग्न में जन्मे व्यक्ति ऊर्जावान, अग्रणी, व्यग्र, तार्किक, स्वार्थी, आवेगी, स्वयं को बढ़ावा देने वाले , आक्रामक, मुखर, हठी,अड़ियल,आत्मनिर्भर, शारीरिक रूप से सक्रिय , होशियार यंत्रवत् ढंग से तैयार होने वाले,आत्म केन्द्रित लेकिन लापरवाह , और स्वार्थी से ज्यादा मस्तमौला किस्म के होते हैं ।

आप को किसी भी प्रकार की सख्ती या नियंत्रण पसंद नहीं है, आपको यह पसंद नहीं है की आपको कोंई सीख दे, आपको , कूटनीति और कुशलता सीखने की जरूरत है कुछ करने से पहले अच्छी तरह से सोच लें।

> " बेहतर होगा कि आप सीख लें कि अपनी ऊर्जा के माध्यम से आप कैसे अधिक रचनात्मक उद्देश्यों और परिणामों को प्राप्त कर सकते है ।

भेड़ा आपकी लग्न का प्रतीक है, उसी की तरह, आप अपनी समस्याओं से भिड जाते हैं, इस आशा के साथ कि सामने कोई समस्या हो या लोग आप उन्हें हरा ही देंगे ।

आप जीवन में चुनौतियों को पसंद करते हैं और बहुत ही प्रतिस्पर्धात्मक और कभी कभी जुझारूपना धारण कर लेते हैं। सामान्य दिनचर्या से आसानी से आप ऊब जाते हैं, साथ ही आपको अपनी हठ की आदत सुधारने की ज़रूरत है।

> आपमें एक निर्णय से तत्काल दूसरे निर्णय पर पहुँचने का रुझान है, और हमेशा कुछ नया करने का सोचते हैं। आगे बढने से पहले पिछले कार्य को समाप्त करें । मंगल मेष लग्न का स्वामी है अतः मंगल आपकी कुण्डली में महत्वपूर्ण होगा ।

ॐ

सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

धैर्य

सकारात्मक लक्षण

क्रियाशील व रचनात्मक | स्वतन्त्र | सक्रिय | साहसी

नकारात्मक लक्षण

चंचल दिमाग | शीघ्रकोपी | आवेशपूर्ण | आक्रामक

आपकी कुंडली में ग्रहों का विश्लेषण

ज्योतिष के अनुसार सूर्य को सबसे शक्तिशाली ग्रह माना जाता है, यह जीवन का स्रोत है।सूर्य को स्वास्थ्य, जीवन शक्ति, ऊर्जा, शक्ति, पिता, सम्मान, प्रतिष्ठा, गौरव, प्रसिद्धि, साहस और व्यक्तिगत शक्ति काकारक कहा जाता है।

आपकी कुंडली में सूर्य ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **कुम्भ**	अंश **01:49:30**	नक्षत्र **धनिष्ठा - 3**
स्वामी **पाँचवा भाव**	भाव में **ग्यारहवाँ भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / बाल**

सूर्य आपकी कुंडली मे लाभप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में सूर्य ग्यारहवाँ भाव में एवं कुम्भ राशि में स्थित है।

आप अपनी उपलब्धियों के लिए जाने जाते हैं . आप कुशाग्र बुद्धि तथा रोबीले व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं . आप एक जिम्मेदार, उदार और निपुण मनुष्य हैं . कई लोग मार्गदर्शन और समर्थन के लिए आप की ओर आकृष्ट होते हैं . आप में अच्छे नेतृत्व के गुण हैं और आप काफी प्रसिद्धि अर्जित करेंगें . आप धनाढ्य और दीर्घायु हैं . आप विभिन्न सुख सुविधा का आनंद ले पायेंगें . एक राजा के सामान आप को चिरकाल तक खुशियाँ मिलती रहेंगीं. दूसरें आपके बारे में क्या सोचते हैं - यह आप के लिए बहुत महत्वपूर्ण है

> " आप नेकदिल, न्याय परायण, धर्मभीरू, चतुर और कला-संगीत के शौकीन हैं

कार्यसिद्धि की प्रबल इच्छा आप की भावनाओं पर हावी हो सकती हैं. आप दैवी विश्वास के साथ अपने उद्देश्यों को सिद्ध करते हैं . अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए आप काफी हद तक अपने दोस्तों, परिवारजनों और सहकर्मियों पर निर्भर रहते हैं . आप ऐसे दोस्त बनाने में सक्षम है जो बहुत प्रभावशाली और सत्ताधारक हैं. आप को समूहों में काम करना पसंद हैं . आप में संगठन कौशल हैं और अक्सर सामूहिक गतिविधियों में नेतृत्व की भूमिका अपनाते हैं. आप एक स्वतंत्र सलाहकार के रूप में या अन्य लोगों के संचित धन द्वारा आजीविका कमाता है. कई लोग आपके अधीन काम करते हैं . आप को सरकार अथवा

शक्तिशाली, धनाढ्य वर्ग से मान्यता और ख़्याति प्राप्त हो सकती है

अचानक धन प्राप्ति की भी सम्भावना है .आप अपने परिवार के कर्ता या ज्येष्ठ होंगें - आप पर अपने परिवार की सारी जिम्मेदारियों को निभाने का दायित्व होगा . बच्चे के जन्म में समस्या हो सकती है. बच्चों को स्वास्थ्य तथा अन्य परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है . आप को पेट से संबंधित समस्याएं हो सकती हैं. आत्म केन्द्रित या अहंकारी होने से बचें . मांसाहार व शराब से दूर रहें . कभी किसी को धोखा न दें और न ही झूठी गवाही दें

सूर्य मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः ॥**

चंद्रमा में मन, शक्ति और भावनाओं को प्रभावित करने की क्षमता है। चंद्रमा पानी और प्राकृतिक शक्तियों से जुड़ा हुआ है,यह एक ढुलमुल ग्रह है जो परिवर्तनों से संबंधित है। चंद्रमा भावनाओं, कल्पना, माता, हृदय, स्मृति, नींद, यात्रा, इच्छा, बचपन, बुद्धि से सम्बंधित है। चंद्रमा व्यक्ति कीइच्छाओं और पसंद से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में चन्द्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **वृश्चिक**	अंश **25:48:13**	नक्षत्र **ज्येष्ठा - 3**
स्वामी **चौथा भाव**	भाव में **आठवाँ भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / बाल**

चन्द्र आपकी कुंडली मे योगकारक है

आपके जन्मपत्रिका में चन्द्र आठवाँ भाव में एवं वृश्चिक राशि में स्थित है।

आप सबसे अधिक अपनी भावनात्मक तीव्रता के लिए जाने जाते हैं. आप कोई भी कार्य कभी भी अधूरा नहीं करते हैं ; या तो सब कुछ या कुछ भी नहीं है - यही आप का सिद्धांत हैं . आप के मन में दूसरों के प्रति कर्तव्य और दायित्व की दृढ़ भावना है. आप बहुत ज्यादा गंभीर हैं और जीवन के बारे में चिंता करते हैं . आप अंदर से काफी नाजुक हैं. आप जीवन भर सुरक्षा तलाशते रहते हैं जिसके लिए आप कठिन परिश्रम भी करते हैं . भय और चिंता आप को अधिक ईमानदार और दृढ़ संकल्पी बनाते हैं . आत्मविश्वास के बल पर आप वास्तव में सराहनीय ऊंचाइयों तक पहुंच सकते हैं. अस्थिरता आपकी विफलताओं का मुख्य कारण होती हैं . धैर्य और सब्र रखें

> " अधिकतर आप उदासीन और आत्मविश्लेषी रहते हैं

आप बहुत संवेदनशील हैं और गैर-भौतिक वास्तविकता और अनुभावों में गहरी रुचि रखते हैं. आप गुप्त ज्ञान को प्राप्त करने और सभी छिपे पहलुओं की खोज की ओर प्रवृत्त रहते हैं . आप मृत्यु के बाद जीवन से संबंधित मामलों में रुचि रखते हैं . आपका मन अधोलोक में डूबा रहता है . लोगों को आपका व्यवहार

बाध्यकारी या जुनूनी लग सकता है. आपका मन हमेशा कुछ गहरे की तलाश में रहता हैं . भावनाओं में तेजी से उतार चढ़ाव आते रहते हैं .सामाजिक और मानवीय गतिविधियों की ओर आपका रुझान है. आप खनन और तेल उद्योग में सफल हो सकते हैं . आप अनुसंधान और अन्वेषक कार्यों के लिए बहुत ही उपयुक्त हैं

आप को वैवाहिक संबंधों से और विरासत से लाभ प्राप्त होगा . वित्तीय मामलों में उतार-चढ़ाव बना रहेगा. मां से संबंध अच्छे नहीं रहेंगें . मां के साथ कुछ गहरे मतभेद हो सकते हैं. परिवार के सदस्यों तथा सहयोगियों के साथ मन मुटाव और झगड़ें होने की संभावना है . किसी के प्रति सशक्त भावनायें उस पर हावी होने की तीव्र इच्छा या जलन पैदा कर सकती हैं.नाग, सांप और अन्य प्रकार के रेंगने वाले जंतुओं से भय बना रहेगा . गैर कानूनी और अवैध कामों से दूर रहें . दूसरों के साथ छल न करें . बुजुर्गों का आशीर्वाद लें

चंद्र मंत्र	**॥ ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः ॥**

ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह हिम्मत और तानाशाही से सम्बंधित है। मंगल ग्रह को कार्य और विस्तार का ग्रह माना जाता है। मंगल, शक्ति, साहस, क्रोध, दुश्मन, हिंसा, छोटे भाई, बल, मांसपेशियों और वीरता से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में मंगल ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **मीन**	अंश **14:59:03**	नक्षत्र **उत्तर भाद्रपद - 4**
स्वामी **पहला ,आठवाँ भाव**	भाव में **बारहवां भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / युवा**

मंगल आपकी कुंडली मे योगकारक है

आपके जन्मपत्रिका में मंगल बारहवां भाव में एवं मीन राशि में स्थित है।

आप आंतरिक रूप से बहुत मजबूत हैं . आप में अकेले चलने का साहस हैं; आप किसी पर भी निर्भर नहीं रहते . आप कोई भी कार्य गुप्त रूप से या पर्दे के पीछे रहकर प्रभावी ढंग से कर सकते हैं . आप अपनी इच्छाओं और काम को गुप्त रखने में विश्वास करते हैं. आप को निरंतर प्रेरणा और प्रोत्साहन की जरूरत होती है. आप अपने आय और व्यय के बीच हमेशा एक संतुलन बनाए रखते हैं .आप में तीव्र भावनात्मक प्रतिक्रियाएं, दमित आकांक्षाएं और उन्माद हो सकते हैं . लोग इस बात को भांप सकते हैं और आप के लिए समस्या पैदा कर सकते हैं

> " आप एक स्वतंत्र परन्तु संकोची व्यक्ति हैं

गुप्त शत्रुओं के कारण बदनामी और परेशानी हो सकती है . आप पर झूठे आरोप लग सकते है. आप को अपने भीतर छिपी गहरी असन्तोष की भावना को दूर करने की आवश्यकता है . आप कई बार अकेलापन महसूस करते हैं. अपनी ऊर्जा को जीवन के अर्थ समझने और मानवता के विकास की ओर निर्देशित करें .आप सेवा सम्बंधित गतिविधियों में संलग्न रहेंगें . खेल के साथ जुड़े कैरियर में आप बहुत ही सफल रहेंगें . सामाजिक विज्ञान, लेखन, ज्योतिष, आयात -निर्यात के व्यवसाय में भी आपकी रुचि हो सकती हैं

आप को अपने भाई बहनों से पूरा समर्थन मिलेगा . आपका पारिवारिक जीवन ठीक रहेगा . आपके विवाह में विलम्ब हो सकता हैं . आप को अपने ससुराल की ओर से काफी धन और संपत्ति का लाभ हो सकते है . आप को आधे सिर का दर्द, आकस्मिक विकार, मानसिक समस्याएं, आदि जैसे रोग हो सकते हैं . आप अक्सर परास्त और थका महसूस करते हैं . आप को सुबह खली पेट शहद का सेवन करना चाहिए . दूसरों की आलोचना करने से बचें

मंगल मंत्र	**॥ ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः ॥**

बुध बुद्धि और शिक्षा का ग्रह है, यह भाषण और तर्क से सम्बंधित है और इस प्रकार व्यक्ति के संचार कौशल पर इसका प्रभाव पड़ता है। बुध स्मृति, भाषण, राजनीति, व्यापार और व्यापार, मित्रों, मामा, चाचा, भतीजे, दत्तक पुत्र और तर्क से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में बुध ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **मकर**	अंश **27:50:53**	नक्षत्र **धनिष्ठा - 2**
स्वामी **तिसरा ,छठा भाव**	भाव में **दसवां भाव**	अस्त/अवस्था **हाँ / बाल**

बुध आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में बुध दसवां भाव में एवं मकर राशि में स्थित है।

भाषा और संचार आपके जुनूनी शौक हैं . आप अधिकार के साथ बात करते हैं और आप में संतुलित तथा व्यवहारिक वार्ता का कौशल है . कुछ नया और रोमांचक की तलाश में आप अक्सर करियर बदलते रहते हैं . आप ऐसे व्यवसायों की ओर खिंचे चले जाते हैं जहाँ आप को विश्लेषण और संगठन करने तथा स्वतंत्र रूप से बोलने के अवसर मिलें . आप अपने पेशे में वाणी तथा लेखन का भरपूर प्रयोग कर सकते हैं . अध्यापन के क्षेत्र में आप का भविष्य उज्जवल हो सकता है . आप में कई प्रतिभएँ विद्यमान हैं, जिस वजह से आप एक साथ कई कार्यों में संलग्न हो सकते हैं . दलाली, प्रोफेसरी, पत्रकारिता, वकालत, ज्योतिष, लेखांकन, विज्ञापन, इंजीनियरिंग आदि क्षेत्रों में आपको यश प्राप्त होगा. आप कंप्यूटर, संगीत वाद्ययंत्र, रेडियो, टेलीविजन, इलेक्ट्रॉनिक आइटम आदि के व्यापार में उत्कृष्ट सफलता प्राप्त कर सकते हैं

> " आपकी मानसिक सतर्कता और निपुणता तथा नेतृत्व के गुण आप की मुख्य पूंजी हैं

आपके व्यवसाय में निरंतर भ्रमण करते रहने की संभावना है . अपनी विस्तृत बुद्धि और कुशल संचार कौशल के बल पर अपने लिए निर्धारित किसी भी

कैरियर में बहुत सफल होंगें . आप को जीवन में सम्मान, सत्ता, रुतबा, पद प्राप्त होंगें . आप साहसी, निर्मल मन और अच्छे आचरण वाले व्यक्ति हैं . आप कई विषयों की जानकारी रखते हैं . आप अपने मधुर स्वभाव और महान कार्यों के लिए लोकप्रियता हासिल करेंगे . आपके कई मित्र तथा समर्थक होंगें . आप को विरासत में पैतृक संपत्ति मिलने की संभावना है आप अपने स्वयं के प्रयासों से अच्छे घर का निर्माण कर पायेंगें

आप वैवाहिक जीवन और मानसिक सुख का आनंद उठा पायेंगें . दमा, हर्निया, गुर्दे और पेट से संबंधित रोग आप को परेशान कर सकते हैं . हवाई और समुद्री यात्रा आप के लिए हानिकारक साबित हो सकती हैं . मांसाहार और शराब का सेवन न करें . धार्मिक स्थानों में चावल और दूध का दान दें . अपने घर को किराए पर मत दें . अपने घर के ईशान कोण (उत्तर पूर्वी कोने) में एक तुलसी का पौधा अवश्य लगाएं.

बुध मंत्र	**॥ ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः ॥**

बृहस्पति को मंत्रि ग्रह माना जाता है जो ज्ञान, खुशी और अच्छे भाग्य से संबंधित है। बृहस्पति धन, ज्ञान, गुरु, पति, पुत्र, नैतिक मूल्यों, शिक्षा, दादा दादी और शाही सम्मान का कारक है। यह धार्मिक धारणा, भक्ति और लोगो के विश्वास को दर्शाता करता है।

आपकी कुंडली में गुरु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **मकर**	अंश **08:04:32**	नक्षत्र **उत्तर षाढ़ा - 4**
स्वामी **नौवां ,बारहवां भाव**	भाव में **दसवां भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / वृद्ध**

गुरु आपकी कुंडली मे योगकारक है

आपके जन्मपत्रिका में गुरु दसवां भाव में एवं मकर राशि में स्थित है।

आप एक सौहार्दपूर्ण और उदार स्वभाव के व्यक्ति हैं . आप का व्यक्तित्व विनम्र और मृदु हैं . आप के चुंबकीय व्यक्तित्व की वजह से लोगों को यकीन हो जाता है कि आप उन्हें निराश नहीं करेंगे . आप एक स्वाभाविक नेता और मार्गदर्शक हैं - सदा दूसरों की भलाई हेतु कुछ करने के लिए प्रेरित और तत्पर रहते हैं .आप शारीरिक रूप से थोड़े आलसी या सुस्त हो सकते हैं . आम तौर पर आप मधुर स्वभावी रहते हैं लेकिन कभी कबार आप बहुत ही चिड़चिड़े और गुसैल भी हो सकते हैं

> " आप एक आकर्षक और शांतचित्त व्यक्तित्व के स्वामी हैं

ऐसे में छोटी छोटी साधारण बातों से मानसिक तनाव उत्पन्न हो सकता है . स्वादिष्ट भोजन आपकी कमजोरी है .अपने कैरियर के मामले में आप सुबोध और परिपक्व दृष्टिकोण रखते हैं . आप जन्मजात बुद्धिमान और व्यवहार कुशल हैं जिस कारण आप किसी भी पेशे में सफल हो पाएंगें . आप ईमानदारी और सच्चाई में विश्वास रखते हैं और अपने कार्यस्थल पर सभी आवश्यक मानदंडों और परंपराओं का पालन करते हैं . आप का व्यावसायिक जीवन बहुत ही

संतोषजनक और शांतिपूर्ण रहेगा

आपको अपने पेशे में या अपने समुदाय में विस्तार और सफलता के कई अवसर प्राप्त होंगें . आप में दूसरों को अपने व्यापक, दूरदर्शी योजनाओं, सपनों और नज़रिये में शामिल करने की क्षमता है .प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्ति में बाधाएं आ सकती हैं; परन्तु इन मुश्किलों को पार करने के बाद आप उच्चतम शिक्षा प्राप्त कर पायेंगें . आपके जीवन में ४० - ५४ वर्ष की आयु का दौर एक बहुत ही अनुकूल समय होगा .घर के क्षेत्र के भीतर मंदिर का निर्माण न करवाएं . कोई भी काम शुरू करने से पहले आप अपनी नाक जरूर साफ करें

गुरु मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः ॥**

वीनस कामुक सुख और कामुक आवेगों से सम्बंधित है। चमक और जीवन शक्ति का ग्रह होने के नाते भौतिकवाद और मांस के आनंद को दर्शाता है। वीनस को यौन इच्छाओं (काम), कामेच्छा, पत्नी का महत्व का कारक माना जाता है। यह जुनून, विवाह, लक्जरी लेख, गहने, वाहन, आराम और सुंदरता से संबंधित है।

आपकी कुंडली में शुक्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **मीन**	अंश **16:26:45**	नक्षत्र **उत्तर भाद्रपद - 4**
स्वामी **दूसरा ,सातवाँ भाव**	भाव में **बारहवां भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / युवा**

शुक्र आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में शुक्र बारहवां भाव में एवं मीन राशि में स्थित है।

आप एक स्नेहशील, जीवंत, धार्मिक और भरोसेमंद व्यक्ति हैं . आप बहुत ही दयालु है और संवेदनशील प्रकृति के इंसान हैं . आप भौतिक चीज़ों से अधिक लोगों से लगाव रखते हैं . समाज द्वारा परिभाषित भौतिक सफलता आप के लिए कोई मायने नहीं रखती . आप जीवन के गूढ़ अर्थ को समझना चाहते हैं. आप काफी आध्यात्मिक हैं; आप हर किसी को समान रूप से प्यार करते हैं . आप एक लंबा जीवन जीएंगें .आप में असाधारण रचनात्मकता और कलात्मक प्रतिभा हो सकती है

> " आप में करुणा की सशक्त भावना है; दूसरों की सेवा और मदद करने की प्रबल इच्छा भी हैं

आप आध्यात्मिक नेता, लेखक, और मनोवैज्ञानिक बन सकते है जिससे आपको लोगों की मदद करने का अवसर मिले . आप को सरकार की ओर से लाभ प्राप्त हो सकता है . व्यावसायिक साझेदार आप का अनुचित लाभ उठा सकते हैं .आप आसानी से प्यार में धोखा खा जाते हैं . आप के प्रेम संबंध अधिकतर गुप्त होते हैं . प्रेम प्रसंगों में आपको अक्सर संकोच, अकेलेपन और समस्याओं का सामना करना पड़ता है . आप एकांत प्रिय हैं और अपने आप में संतुष्ट रहने के

कारण आप समाज से कट सकते हैं . आप शायद ही कभी अपनी अंतरतम भावनाओं को प्रकट करते हैं

आपके अनुसार सच्चे सुख का आनंद गुप्त रूप से या परदे के पीछे ही लिया जाता है.आप निषेधित या अवैध रिश्तों में उलझ सकते हैं. शराब, नशीले पदार्थ या अति कामुकता आप के आत्मनाश का कारण बन सकती हैं.आप अपने परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों को बहुत चाहते हैं . मुसीबत के समय में आपकी पत्नी ढाल के रूप में आपके साथ खड़ी रहेंगीं . आपके जीवन साथी का स्वभाव बहुत ही उत्तम रहेगा; परन्तु वे जुबान के तेज़ हो सकते हैं . नशीले पदार्थों और शराब से दूर रहें

शुक्र मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः ॥**

शनि एक धीमी गति का ग्रह है। इसे न्याय, तर्क और विनाशकारी शक्तियों का ग्रह कहा जाता है। यह आपदाओं और मृत्यु से संबंधित है। शनि को एक शिक्षक के रूप में भी माना जाता है। शनि लंबी उम्र से सम्बंधित है। यह देरी, अवरोध, दु: ख, नुकसान, चोरी, बुढ़ापे, दु: ख, प्रतिकूलता और आजादी सेसम्बंधित है।

आपकी कुंडली में शनि ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **वृश्चिक**	अंश **04:05:39**	नक्षत्र **अनुराधा - 1**
स्वामी **दसवां ,ग्यारहवाँ भाव**	भाव में **आठवाँ भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / मृत**

शनि आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में शनि आठवाँ भाव में एवं वृश्चिक राशि में स्थित है।

आप मेहनती, धैर्यवान और मितव्ययी व्यक्ति हैं . आप में आत्म अनुशासन की क्षमता है . आप का जीवन के प्रति एक ईमानदार और गंभीर दृष्टिकोण है . आप वित्तीय सुरक्षा की खोज में अपने आप को सामाजिक जीवन से वंचित रखते हैं . आपका दृढ़ संकल्प और ईमानदारी ही आपकी सफलता के मुख्य कारण होती हैं . पैतृक धन, दाम्पतिक जीवन, कर, बीमा इत्यादि मामलों में अवरोधों और समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है . आप को अपने व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन - दोनों में ही कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है . एक छोटी सी समस्या भी अपने मन को परेशान कर सकती है. आप का झुकाव काला जादू, तंत्र मंत्र और गुह्यविद्या में हो सकता है

> " आप लम्बा जीवन जीयेंगें

आप को अपने परिवार से अलग होना पड़ सकता है; अपने कैरियर की वजह से बहुत ही कम उम्र में आप को घर छोड़ना पड़ सकता हैं . आप तेल या पेट्रोलियम व्यवसाय, खनन, सर्जरी, योग विद्या, ज्योतिष, वकालत, आदि में सफल हो सकते हैं . आप व्यावसायिक सफलता, पदोन्नति, कार्यसफलता,

अधिकार पद और प्रसिद्धि अर्जित करेंगे. आप बहुत ही अल्प आयु में काम करना शुरू कर देंगे. उम्र के ४८ वर्ष बाद अच्छा समय प्रारम्भ होगा. आप विवाहित जीवन में सुख का अनुभव करेंगें .किसी भी विवाहेतर संबंध से दूर रहें. अपनी कामुक भावनाओं पर संयम रखने की आवश्यकता है. पिता के साथ अनबन हो सकती है

परिवार के सदस्यों के बीच मतभेद और दूरी संभव है . संतान के विषय में चिंता बनी रहेगीं . आप अनुशासन के माध्यम से अपने बच्चों के जीवन में परिवर्तन लाने की कोशिश करेंगें . आप पेट की समस्याओं से पीड़ित हो सकते है . आप अस्थमा, खांसी, सर्दी, दांतों और गले की समस्याओं से भी परेशान हो सकते है . नदियों या तालाब के साफ़ पानी में स्नान करने से आपको हमेशा अच्छे परिणाम मिलेंगें . आप अपने पास चांदी का एक चौकोर टुकड़ा रखें . नहाते समय किसी पत्थर या लकड़ी के ऊपर खड़े हो कर नहाएं

शनि मंत्र	**॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ॥**

अजीब और अपरंपरागत ग्रह होने के कारण राहु भौतिकवाद से सम्बंधित है और कठोर वाणी, कमी और इच्छा से सम्बंधित है। राहु को ट्रान्सेंडेंटलिज्म का ग्रह कहा जाता है। यह विदेशी भूमि और विदेशी यात्रा से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में राहु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **मेष**	अंश **29:09:37**	नक्षत्र **कृतिका - 1**
स्वामी **छठा भाव**	भाव में **पहला भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / मृत**

आपके जन्मपत्रिका में राहु पहला भाव में एवं मेष राशि में स्थित है।

आप का माथा चौड़ा है और चेहरा आनुपातिक रूप से सुडौल है. आप अपने व्यक्तित्व को अपने तरीके से परिभाषित करना पसंद करते हैं . आप में बहुत ज्यादा अधीरता और उत्सुकता हो सकती है - बिलकुल एक बच्चे जैसी . आप काफी साहसी भी हैं और किसी भी बात में पहल करने में संकोच नहीं करते . आप का दिमाग चंचल है . आप उच्च स्तर तक पहुचेंगें और काफी प्रतिष्ठा और धन प्राप्त कर पायेंगें . जीवन के प्रति आपका दृष्टिकोण असामान्य हैं . आप में प्रबल कल्पना शक्ति है और आप स्वभाव से बहुत चालाक हैं. हालांकि आप बुद्धिमान हैं, आप पढ़ाई में रुचि नहीं ले पातें . आप में अपने काम को अधूरा छोड़ने की प्रवृत्ति है

> " आप अपनी ही पहचान से आसक्त हैं

आप अक्सर क्रोधित हो जाते हैं . आप स्वभाव से आलसी हो सकते हैं . आप को कोई सलाह दे - यह बात आप को पसंद नहीं है . आप कहानियाँ बनाने या झूठ बोलने में माहिर हैं .आप को गपशप करना और दोस्तों के साथ घूमना बहुत पसंद है . वैवाहिक जीवन अधिक खुशहाल नहीं होगा . घरेलू झगड़े और वाद विवाद होते रहेंगें . आप के अपनी पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं . संतान प्राप्ति में समस्या हो सकती है

आप को भौतिक संपत्ति से बहुत ज्यादा लगाव है . आप एक बहुत अच्छे अभिनेता, जादूगर, मार्केटिंग प्रबंधक बन सकते हैं; अपितु सरकारी विभागों या राज्य से आपको कोई लाभ नहीं होगा . आप जुए या सट्टेबाज़ी से अच्छा धन कमा सकते हैं .आप की सिर दर्द और शरीर के ऊपरी भाग के रोगों से ग्रस्त होने की संभावना है . आप लकवा, दिल की बीमारी, कमजोर दृष्टि, कमजोर हड्डियों और दांतों की समस्या से पीड़ित हो सकते हैं . दक्षिण मुखी घर में न रहें . अपने

भाइयों और बहनों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखें. घर में टूटे बर्तन न रखें. उन्हें फेंक दें

राहु मंत्र	॥ ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः ॥

केतु मोक्ष, पागलपन का ग्रह है। यह आध्यात्मिकता से सम्बंधित है। केतु रहस्यमय, भ्रामक, गुप्त और पेचीदा ग्रह है। केतु दर्द, रहस्य, गुप्त विज्ञान, उदासीनता, दर्शन, अलगाव और कारावास का प्रतीक है।

आपकी कुंडली में केतु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
तुला	29:09:37	विशाखा - 3
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
बारहवां भाव	सातवाँ भाव	नहीं / मृत

आपके जन्मपत्रिका में केतु सातवाँ भाव में एवं तुला राशि में स्थित है।

विवाह में बाधा हो सकती है . विवाह विलंब हो सकता है या फिर वैवाहिक जीवन में परेशानियां हो सकती हैं .आप एक आकर्षक और आशावादी व्यक्ति हैं . आप दूसरों को प्रोत्साहित करते हैं . आप का स्वभाव संतुलित और शांत है . आप जोशीले और रचनात्मक तरीके से काम करते हैं . समाज में आप का बहुत प्रभावी और शक्तिशाली रुतबा है .अपने परिवार की उत्तरदायित्व के प्रति आप चिंतित रहते हैं और अपनी जिम्मेदारियां पूरी निष्ठां के साथ निभाते हैं . आप को विवाह करने में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है; संभवतः शादी देर से होगी और वैवाहिक जीवन में बाधाओं आ सकती हैं

> " जोड़ीदारों के बीच आस्था और विश्वास की कमी हो सकती है

आप के दो विवाह भी हो सकते हैं . आप को कई बार लम्बे समय के लिए अपने पति या पत्नी से अलग या दूर रहना पड़ सकता है . आप का जीवनसाथी सुंदर और सक्षम होगा . आप के अन्य महिलाओं के साथ संबंध हो सकते हैं और परिणाम स्वरुप आप को अपमान का सामना करना पड़ सकता है . आपकी संतान आप के लिए भाग्यशाली साबित होगी .आप नौकरी और व्यापार दोनों के लिए उपयुक्त हैं. कंप्यूटर, स्टेशनरी, टेलीविजन, महिलाओं संबंधित आइटम, शिक्षण, पर्यटन, परामर्श, आदि आपके लिए अच्छे कैरियर विकल्प हैं. आप प्रतिभाशाली विवाह सलाहकार और मध्यस्थ वार्ताकार बन सकते हैं.आप हर्निया या आंतों में संक्रमण से ग्रस्त हो सकते हैं

आपके पेट का क्षेत्र भी कमजोर है . आप को मूत्र और प्रजनन अंगों से सम्बंधित रोग हो सकते हैं . आप गुप्त रोगों से पीड़ित हो सकते हैं . मीठी वाणी का प्रयोग करें . झूठा वादा और घमंड कभी न करें . अपमानजनक और अभद्र भाषा का प्रयोग न करें . कभी छल और कपट न करें . गहरे पानी और ऊंचाइयों से दूर रहें

केतु मंत्र	॥ ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः॥

उल्का योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि:	11-9-2022 17:51
समाप्ति तिथि:	11-9-2028 17:51

उल्का योगिनी दशा की छठी योगिनी दशा है। इसकी अवधि 6 वर्ष की होती है तथा इसके स्वामी "शनि" को माना गया है। उल्का को एक अशुभ दशा माना गया है। शनि की छाया की वजह से इस अवधि को चुनौतीपूर्ण माना गया है तथा इस दौरान आपका जीवन प्रतिकूल दशा में चलने की संभावना है। चूँकि उल्का योगिनी की दशा के साथ उसकी अन्तर्दशा भी आती है इसलिए ये जरुरी नहीं है कि इस पूरी अवधि में आपका समय ख़राब ही चलेगा इस योगिनी की अंतर्दशा की वजह से उसके कुछ अच्छे और अनुकूल परिणाम भी आपको देखने को मिलेंगे। ये दशा हमेशा अशुभ फल ही दे ऐसा जरुरी नहीं है। इस दशा के स्वामी शनि है तो इस दशा में आपके जीवन के विभिन्न पहलुओं में कुछ न कुछ चुनौती का सामना आपको करना ही पड़ेगा। आपके कार्यक्षेत्र में परेशानी आ सकती है। आपके द्वारा किये गए कार्य में देरी हो सकती है या फिर आपने कोई काम बिल्कुल सही ढंग से किया हो सब सही चल रहा हो किन्तु अंतिम समय में कुछ परिस्थिति ऐसी हो जाये जिसकी वजह आपका कार्य बिगड़ सकता है या परिणाम में देरी हो सकती है। ऐसी परिस्थिति में आप अपना धैर्य न खोये और न ही जल्दबाज़ी में कोई फैसला लें। शनि के प्रभाव की वजह से आपका आपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ तनावपूर्ण संबंध हो सकता है इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप जितना हो सके गलती करने से बचें। आपके दफ्तर में आपके साथ काम करने वाले सहकर्मी का व्यवहार आपके प्रति बदल सकता है। आपको पहले की तरह सहयोग नहीं भी कर सकते है तो ऐसी परिस्थिति में खुद पर संयम रखें और शांति के साथ उनसे बातचीत करें।

आर्थिक रूप से भी आपको कुछ दिक्कत होने की संभावना है। जहाँ एक तरफ आप धन संचय की योजना बनाने की कोशिश करेंगे वही दूसरी तरफ आपके घर चोरी होने की संभावना हो सकती है।, इसलिए आपको अपने घर में कीमती सामान को सुरक्षित रखना चाहिए।

आपके घर का माहौल उदास हो सकता है जिसका कारण आप और आपके परिवार ही होंगे। आपके बच्चों की तरफ से आपको प्रतिकूल समाचार मिलने की संभावना है जैसे उनके परीक्षा के परिणाम या अनुकूल विद्यालय में नामांकन का न होना इत्यादि। इसके साथ ही आपको अपने और अपने बच्चों तथा माता-पिता की सेहत का भी खास ख्याल रखना चाहिए। आपको अपने रिश्तेदारों के स्वास्थ्य पर भी नज़र रखना चाहिए क्योंकि इस अवधि के दौरान उनकी तरफ से किसी बड़े की मृत्यु की संभावना बन सकती है।

इन तमाम बातों और परिस्थिति को देखते हुए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने मन को शांत रखें, किसी भी कार्य में जल्दबाज़ी न करें और अपना धैर्य बनाये रखें।

उपाय

- उल्का महादशा के दौरान 7 और 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से आपको लाभ प्राप्त होगा।

उल्का - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि:	11-9-2022 17:51
समाप्ति तिथि:	11-9-2023 23:51

उल्का योगिनी की पहली अंतर्दशा "उल्का अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 14 महीने तक चलती है। शनि की दशा में शनि की अंतर्दशा होने की वजह से ये समय आपके लिए बहुत कठिन हो सकता है। आपके करियर से लेकर आपके व्यक्तिगत संबंध तक आपको को चुनौती और कई नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आपके रोजगार के क्षेत्र में आपका काम ढंग से न चलने की संभावना है जिसकी वजह से आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके खुश नहीं रहेंगे और आपकी नौकरी जाने की संभावना बन सकती है। नौकरी जाने की वजह से आपको आर्थिक तंगी का सामना भी करना पड़ सकता है।

आपके व्यक्तिगत संबंध भी अच्छे और सुचारु ढंग से नहीं चलेंगे। आपका वैवाहिक जीवन भी सुखद रूप से चलने में परेशानी है, आपका और आपके जीवनसाथी के बीच मतभेद होने की सम्भावना है। आपके परिजन भी आपसे किसी भी कारणवश खुश नहीं रहेंगे। सेहत के मामले की बात करें तो उसमे भी आपको कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपनी सेहत को लेकर थोड़ी भी आशंका होती है तो तुरंत आपको डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए। आपको अपने रिश्तेदारों का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इस दौरान आपके रिश्तेदार में मृत्यु की संभावना है। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप इस अवधि के दौरान सचेत रहें और अपनी बुद्धि से काम लें।

उपाय

- शनि की स्थिति को मजबूत करने के लिए कस्तूरी, सेमल के पेड़ की टहनियाँ और सामग्री, बेल के पत्ते या फल, और कैक्टस और गुलाब जैसे कांटेदार पौधों का उपयोग करें। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ शमी/खेजड़ी के पेड़ या सेमल की शाखा, पत्ते या टहनी का भी हवन में उपयोग कर सकते हैं। संकटा तथा उल्का दशा के दौरान उपाय करना आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि:	11-9-2023 23:51
समाप्ति तिथि:	11-11-2024 2:51

उल्का योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "सिद्धा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 16 महीनों की होती है तथा इसके स्वामी "शुक्र" को माना गया है। शनि और शुक्र की मिलीजुली प्रभाव की वजह से इस अन्तर्दशा का प्रभाव भी मिश्रित देखा जाता है।

शुक्र के प्रभाव की वजह से इस अवधि में आपका थोड़ा कल्याण हो सकता है, किन्तु शनि के प्रभाव होने की वजह से सब कुछ एकदम से ठीक नहीं हो जायेगा आपके कार्य में बाधाएं आयेंगी किन्तु आप उसे अपनी मेहनत और दृढ़ता से दूर करने में सक्षम होंगे। आप अपने दृढ मेहनत और विश्वास से अपने लक्ष्य को पाने में सक्षम होंगे। इस अवधि में आपकी मेहनत और लगन ही आपकी सफलता की कुंजी होगी।

इस अवधि के दौरान आपको अच्छी ख़बरें मिलेंगी आपका विदेश यात्रा की संभावना बन सकती है। अपने छुट्टी का समय आप अपने परिवार और मित्रों के साथ बितायेंगे, उनके साथ यात्रा की योजनाएं बनायेंगे। यात्रा करते हुए आप हर जरुरी दस्तावेज अपने साथ रखें और अपनी कीमती सामान को अपने पास संभाल के रखें। ये अवधि आपके लिए शुभ और अशुभ दोनों पहलु को लेकर आती है इसलिए आपको सावधान रहने की जरूरत है।

आपका स्वास्थ्य आपके चिंता का कारण बन सकता है इसलिए डॉक्टर की सलाह का पालन करने का प्रयास करें और स्वस्थ जीवन शैली अपनाएं। इस अवधि के दौरान आपको किसी प्रिय को खोने का डर भी आपको परेशान कर सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि किसी भी बात को लेकर अधिक न सोचें जो आपके तनाव का कारण बनें और हर परिस्थिति में समझदारी से काम लें।

उपाय

- शुक्र की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए छोटी इलायची, गूलर के पौधे, सेमल के पेड़ का कोई भाग, सुगंध वाली वस्तुएं जैसे इत्र और धूप, फूल के पौधों का उपयोग करना चाहिए। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ गूलर का भी उपयोग करना चाहिए। हवन में गूलर के पत्ते, या टहनी का प्रयोग करें। उल्का सिद्धा दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको लाभ प्राप्त होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि:	11-11-2024 2:51
समाप्ति तिथि:	13-3-2026 2:51

उल्का योगिनी की तीसरी अंतर्दशा "संकटा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 2 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "राहु" है। इस अवधि को नकारात्मक और कठिन माना जाता है क्योंकि इस अंतर्दशा पर राहु का साया है।

माना जाता है कि राहु की मौजूदगी जीवन में अशांति फैलाती है, इसलिए इस अवधि को चुनौती से भरा हुआ माना जाता है। ये समय आपके और आपके परिवार के लिए कठिन हो सकता है। आपका परिवार, आपके जीवनसाथी, आपके बच्चे, गृहस्थ और मित्र सभी कठिन समय से गुजर सकते हैं। जहां वे स्वास्थ्य को लेकर, वित्तीय नुकसान को लेकर, स्कूल में किसी कठिनाई से या रोजगार के क्षेत्र में परेशानी से पीड़ित हो सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में एक दूसरे का साथ देने की कोशिश करें, एक दूसरे का सहारा बनें। इस अवधि में अपने रिश्तेदार और अपने माता-पिता की सेहत का ख्याल रखें। किसी भी परिस्थिति में तनाव से बचें क्योंकि तनाव आपके स्वास्थ्य के साथ-साथ आपके मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है। डॉक्टर की सलाह का पालन करने और स्वस्थ जीवन शैली बनाए रखने का प्रयास करें। इस अवधि के दौरान आप पने किसी प्रियजन को खो सकते हैं। आपके परिवार के लोग कई बार आपके विचारों से सहमत नहीं होंगे। आपके रिश्तेदार आपकी समझ और विचार के खिलाफ काम कर सकते है, जिसकी वजह से आपको अनेक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि जितना हो सके इस समय विवादों से बचें, ये समय थोड़ा कठिन है इसलिए इस समय में थोड़ी सावधानी बरतें।

उपाय

- राहु को मजबूत करने के लिए आपको मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सोंठ, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का उपयोग करना चाहिए। केतु की स्थिति को मजबूत करने के लिए ईख से बनी वस्तुएं, नारियल के रेशे से बनी वस्तुएं, सेंधा नमक, सोफ, गिलोय, नींबू का प्रयोग हवन के लिए कर सकते हैं। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ हरी दूर्वा घास या ईख का भी हवन में प्रयोग करना चाहिए। संकटा दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको अत्यंत लाभ प्राप्त होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	13-3-2026 2:51
समाप्ति तिथि:	12-5-2026 23:51

उल्का योगिनी की चौथी अंतर्दशा "मंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 5 महीनों की होती है तथा इसके स्वामी "चंद्रमा" को माना गया है। चन्द्रमा की प्रभाव की वजह से इस अवधि का प्रभाव भी आपके जीवन में अनुकूल ही होगा।

आपके जीवन में चल रही कठिनाईयों से चंद्रमा आपको आवश्यक राहत दिलाएगा। इस अवधि के दौरान आपको अनेक लाभ प्राप्त होंगे और साथ ही आपको करियर के क्षेत्र में भी अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। आपको अपनी परियोजनाओं में सफल होने के लिए आवश्यक समर्थन मिल सकता है। यदि आप व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते है तो आपको आपके व्यवसाय में निवेश करने के लिए अच्छे निवेशक मिल सकते है। आपकी नौकरी की तलाश भी इस अवधि में आ कर पूरी होगी। आपके निजी संबंध भी अच्छे होंगे इस अवधि के दौरान तथा आपका परिवार आपकी खुशियों का कारण बन सकता है। आप पाने जीवनसाथी और अपने बच्चों के साथ अच्छा समय व्यतीत करेंगे साथ ही उनकी तरफ से आपको कुछ अच्छी खबर मिलने की संभावना है।

आप यदि अपनी पढाई बढ़ाना चाहते है तो ये समय आपके पढ़ाई को आगे बढ़ाने के लिए सबसे बेहतर समय है, इस अवधि में आप किसी भी विषय में अपना नामांकन करवा सकते है ये आपके लिए बेहतर परिणाम के अवसर लेकर आयेगा। इस अवधि के दौरान आपकी स्वास्थ्य संबंधी सारी परेशानी से भी राहत मिल सकती है।

उल्का - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	12-5-2026 23:51
समाप्ति तिथि:	11-9-2026 17:51

उल्का योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 5 महीनों की होती है तथा इसके स्वामी "सूर्य" को माना गया है। सूर्य के कठोर स्वभाव का प्रकोप इस अवधि के प्रभाव में भी देखा जा सकता है, आमतौर पर ये अवधि एक प्रतिकूल चरण के रूप में जाना जाता है।

शनि और सूर्य दोनों का मिलाजुला रूप आपके जीवन में कुछ चुनौतियाँ लेकर आता है। आपके कार्यक्षेत्र और आपके परिवार दोनों ही तरफ से आपको परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। ऐसा भो सकता है कि कई चीजें आपके द्वारा बनायी गयी योजना के अनुसार नहीं चले। जिसकी वजह से आपको काम और घर में मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। इस अवधि में आपके माता-पिता का स्वास्थ्य आपके चिंता का विषय बना रह सकता है। इसलिए उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखें और डॉक्टर के द्वारा दी गयी सलाह का पालन करें।

आपको यात्रा करने के अवसर प्राप्त हो सकते है किन्तु यात्रा पर निकलने के दौरान आपको सतर्क रहने की आवश्यकता है। इस अवधि के दौरान यदि आप कार्य की वजह से यात्रा करते है तो वो यात्रा आपकी सफल नहीं होने की भी संभावना है। स्वास्थ्य संबंधी समस्या भी आपको हो सकती है इसलिए आपको नियमति उपचार करना चाहिए और डॉक्टर के संपर्क में रहना चाहिए।

उपाय

- आप बेलपत्र, कमल के बीज, महुआ के पेड़ के फूल, लाल चंदन, आक के पेड़ के फूल, पत्ती और लकड़ी तथा आंवला जैसी वस्तु अपने पास रख सकते हैं। इनमें से एक या एक से अधिक वस्तुएं रखने से आपको लाभ होगा क्योंकि इन वस्तुओं से भगवान सूर्य प्रसन्न होंगे। हवन करते समय

मुख्य सामग्री के साथ-साथ आक का भी प्रयोग करना चाहिए। मंगला पिंगला दशा के दौरान इन उपायों को करना लाभकारी सिद्ध होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि:	11-9-2026 17:51
समाप्ति तिथि:	13-3-2027 8:51

उल्का योगिनी की छठी अंतर्दशा धन्य है। इसकी अवधि 9 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "बृहस्पति" है। इस अवधि को एक कठिन अवधि माना गया है और इस अवधि के प्रभाव भी प्रतिकूल होते है। इस अवधि में आपको कई सारी समस्या का सामना करना पड़ सकता है, आपके जीवन में कठिन चुनौतियां आयेंगी। इस अवधि में आपको अपने स्वास्थ्य का बेहद ख्याल रखना चाहिए क्योंकि आपको स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्या हो सकती है। यदि आपकी सेहत से जुड़ी कोई परेशानी तुरंत खत्म नहीं हो रही है तो आपको जल्द से जल्द डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए।

आपको रोजगार के क्षेत्र में भी कई परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपके साथ वाले सहकर्मी आपके विरोध में खड़े हो सकते है, आपके वरिष्ठ आपके कार्य से संतुष्ट नहीं होंगे जिसकी वजह से आपकी नौकरी खतरे में आ सकती है। कोई भी कार्य करते हुए आप अपना धैर्य न खोये, अपना सारा ध्यान अपने कार्य पर केंद्रित करें। जल्दबाज़ी में कोई भी ऐसा कार्य न करें जिससे आपको बाद में पछताना पड़े।

आपको अपने कार्य में बहुत अधिक प्रगति नहीं मिलने की संभावना है जिसकी वजह से आपको निराशा हो सकती है, किन्तु इस वक़्त आपको हौसले के साथ काम लेना चाहिए ताकि आप इस दुर्लभ परिस्थिति का सामना कर सकें। आपके व्यक्तिगत संबंध भी इस अवधि में प्रभावित होंगे। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप जल्दीबाज़ी में फैसला लेने से बचें।

उपाय

- आप बृहस्पति की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए अनाज, नींबू, हल्दी, पीला सरसों और पीपल के पेड़ से बनी छोटी गोलियों का उपयोग कर सकते हैं। आपको अपने साथ रेशम और प्राकृतिक कपास रखना चाहिए। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ पीपल के पेड़ की शाखाओं और पत्तों का भी हवन में उपयोग करना चाहिए। संकट धान्या दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको बहुत लाभ प्राप्त होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि:	13-3-2027 8:51
समाप्ति तिथि:	11-11-2027 20:51

उल्का योगिनी की सातवीं अन्तर्दशा भ्रामरी है। इसकी अवधि 10 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "मंगल" है। मंगल के प्रभाव की वजह से ये

समय थोड़ा कठिन होता है और इसके प्रभाव भी प्रतिकूल होते है। इस अवधि के दौरान आप में आत्मविश्वास की कमी होने की संभावना है इसके साथ ही आपके जीवन में संघर्ष बना रहेगा। इस अवधि के दौरान आपके शत्रु होने की संभावना है, जो आपके जीवन में परेशानी पैदा कर सकते है। जिसकी वजह से आप चिंताग्रस्त हो सकते है। यदि शांत मन से इन समस्याओं से निपटना चाहे तो आप इन समस्याओं से अच्छे तरीके से निपट सकते है।

आपके निजी जीवन में भी संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। आपके परिवार, प्रियजन, मित्र और सहकर्मी, आपके किसी भी संबंध में इस अवधि के दौरान सामंजस्य स्थापित नहीं हो पायेगा। जिसके कारण आप परेशान रहेंगे आपके मन को शांति नहीं मिलेगी। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने सभी रिश्तें को संभाल के रखें और सभी को साथ ले कर चलें। रिश्तों से आये मतभेद को आप शांतिपूर्ण बातचीत से सुलझा सकते है।

इसके अलावा आपके स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं भी बनी रहेगी। आपके पुराने चोट या पुरानी बिमारियाँ फिर से ताज़ा हो सकती है, जिसको ठीक करने के लिए आपको एक उचित उपचार और बेहतर इलाज की आवश्यकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि सेहत से संबंधित किसी भी मुद्दे को लेकर लापरवाह न रहें। अपनी सेहत का पूरा ध्यान रखें।

उपाय

- मंगल ग्रह की स्थिति को मजबूत करने के लिए आपको बेल की लकड़ी, पत्ते और फूल, खैर के पेड़ की लकड़ी, लाल फूल, महरी, साबुत लाल मिर्च, काली मिर्च और हरड़ का उपयोग कर हवन करना चाहिए। अपने घर में इन मुख्य सामग्री के साथ आप पीपल का भी उपयोग कर सकते हैं। मंगला भ्रामरी दशा के दौरान उसकी स्थिति में सुधार करने के लिए इन पेड़ों की टहनी में रहने वाले घरों का उपयोग कर सकते हैं। आपके लिए ये उपाय लाभकारी सिद्ध होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

उल्का - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि:	11-11-2027 20:51
समाप्ति तिथि:	11-9-2028 17:51

उल्का योगिनी की आठवीं अंतर्दशा भद्रिका है। इस अवधि का समय 25 महीने का होता है तथा इसके स्वामी "बुध" को माना गया है। शनि और बुध दोनों की कृपा इस अवधि के दौरान देखी जाती है इसलिए ये अवधि आमतौर पर मिश्रित परिणाम देने के लिए जाना जाता है।

इस अवधि में आपको आर्थिक लाभ तो होगा किन्तु आपको सतर्क रहने की भी आवश्कता है। धन के नये श्रोत आपको मिल सकते है किन्तु आपको अपनी कीमती सामान के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि इस समय आपका कीमती सामान चोरी हो सकता है। यदि आपको किसी एक क्षेत्र में लाभ हासिल हो रहा है तो दूसरे क्षेत्र में आप हानि के शिकार हो सकते है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि किसी भी मुद्दे पर फैसले को लेने से पहले उसके पक्ष-विपक्ष पर अच्छे से विचार कर लें। जल्दबाज़ी में कोई भी फैसला न लें। आपको आपके परिवार और मित्र की तरफ से शुभ समाचार मिलने की संभावना है, आप उनकी खुशियों का हिस्सा बने। इस अवधि के दौरान आप अपने मनोरंजन के लिए भी कुछ समय निकाल सकते है। आपको ये सलाह दी जाती है की अच्छे और बुरे परिस्थिति चाहे जैसी भी हो आप अपना संयम न खोये और शांत मन से कोई भी कार्य करें।

उपाय

- आप हवन के लिए हाथी के दांत, कांटेदार भूसी के फूल, छुआरे, कस्टर्ड सेब, सफेद पेठा और गन्ने से बनी वस्तुओं का उपयोग कर सकते हैं। हवन

करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ चिचड़ी का भी उपयोग आपको करना चाहिए। उल्का भ्रदारिका दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको बहुत लाभ प्राप्त होगा।

- उल्का महादशा के दौरान 7 तथा 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध होगा।

सिद्धि योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि:	11-9-2028 17:51
समाप्ति तिथि:	11-9-2035 17:51

सिद्धा सातवीं योगिनी दशा है। इसकी अवधि 7 वर्ष की होती है तथा इसके स्वामी "शुक्र" को माना गया है। शुक्र की कृपा की वजह से ये अवधि आपको अनुकूल और सुखद प्रभाव देती है। सिद्धा दशा हर प्रकार से आपका शुभ करती है। ये दशा आपके अनुकूल है जिसकी वजह से यदि आप कोई कार्य आरंभ करते है तो उसके शुभ परिणाम आपको अवश्य प्राप्त होंगे। यदि आपको किसी कार्य के न होने की आशंका है तो आप उस कार्य को यदि इस अवधि में करेंगे तो वो कार्य अवश्य पूरा होगा और आपको सफलता भी हासिल होगी।

आपके जीवन में पहले से चल रही परेशानियों से इस अवधि में आपको कुछ राहत मिल सकती है। आपके जीवन में अच्छे कार्य होंगे, आपको शुभ समाचार मिलने की संभावना है। आपको घर में शुभ अवसरों और समाचार आपको प्राप्त होंगे। आपकी रोजगार के क्षेत्र में भी उन्नति होगी जैसे आपकी आय बढ़ सकती है या आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपके घर में शुभ अवसर आयेंगे, घर में विवाह होने की संभावना है या परिवार के किसी सदस्य को संतान प्राप्ति होगी।

यदि आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ अच्छा करना चाहते है तो ये अवधि आपके लिए व्यवसाय के नये अवसर ला सकती है। यदि आप कई दिनों से रोजगार की तलाश कर रहे है तो ये अवधि आपको आपके मनपसंद रोजगार दिलाने में भी मददगार साबित होगी। आपका रोजगार और व्यवसाय सही ढंग से चलने की वजह से आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अच्छी आर्थिक स्थिति होने की वजह से आप घर खरीदने की योजना बना सकते है और सुख-सुविधा की सभी चीजें अर्जित कर सकते हैं। शुक्र सुंदरता और प्रेम को नियंत्रित करता है, इसलिए इस अवधि के दौरान आप अपनी सुंदरता से जुड़ी चीजों पर ध्यान देंगे। आपको कपड़े और गहने लेने का शौक है जिसकी वजह से आप नये कपड़े और गहने की खरीदारी करने से बाज़ नहीं आयेंगे। अपने विपरीत लिंग के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखते है तथा उनकी संगति का आनंद भी लेते हैं।

उपाय

- शुक्र की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए छोटी इलायची, गूलर का पौधा, सेमल के पेड़ का कोई भाग, सुगंध वाली वस्तुएं जैसे इत्र और धूप, फूल मूली के फूल के पौधे का प्रयोग कर हवन कर सकते हैं।

- सिद्धा महादशा के दौरान 6 या 13 मुखी रुद्राक्ष धारण कर आप उसके लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

सिद्धि - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि:	11-9-2028 17:51
समाप्ति तिथि:	21-1-2030 21:21

सिद्ध योगिनी की पहली अंतर्दशा "सिद्धा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 30 महीने और 20 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "शुक्र" को माना गया है। सिद्धा योगिनी दशा में जब सिद्धा की ही अंतर्दशा होती है तो हर तरफ से सिद्धि ही प्राप्त होती है, सारे बिगड़े कार्य बनते है। इस अवधि के दौरान धन, वैभव, ऐश्वर्य की वृद्धि होने लगती है, कीर्ति और राजसम्मान प्राप्त होने लगता है, प्रियजनों से प्यार और अपनापन प्राप्त होता है। इस अवधि के दौरान आपका आपके जीवनसाथी के साथ संबंध अच्छा और मजबूत रहेगा। आप एक-दूसरे के साथ ख़ुशी के पल साझा कर सकते है। इस अवधि के दौरान आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। आप अपने जीवनसाथी के साथ छुट्टी पर भी जा सकते है। आपके संतान की वजह से आपको खुशखबरी भी मिलने की संभावना है।

यदि रोजगार के क्षेत्र की बात करें तो आपके रोजगार के क्षेत्र में भी तरक्की होने की संभावना है। आपको अपने रोजगार में नये अवसर प्राप्त होंगे और आपकी मेहनत और लगन से आपके वरिष्ठ आपसे खुश रहेंगे और आपके योगदान के लिए आपकी सराहना करेंगे। आपको बेहतर कार्य के लिए पुरस्कृत भी किया जा सकता है। यदि आप अपना कोई व्यापार शुरू करना चाहते है तो ये अवधि आपके लिए शुभ है और व्यापार शुरू करने के लिए ये एक अच्छा समय हो सकता है।

सिद्धि - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि:	21-1-2030 21:21
समाप्ति तिथि:	13-8-2031 1:21

सिद्धा योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "संकटा अन्तर्दशा" है। इसका समय 18 महीने का होता है तथा इसके स्वामी "राहु" को माना गया है। चूँकि इस अवधि पर राहु का शासन है इसलिए आपके जीवन में इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। इस अवधि का प्रभाव आपके व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन पर पड़ने की संभावना है। इस अवधि के दौरान आपके परिवार के लोगों को भी काफी कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। आपके वैवाहिक जीवन पर भी इसका गहरा असर पड़ेगा, आपके और आपके जीवनसाथी के बीच मतभेद हो सकता है। जिसकी वजह से आपको काफी तनाव से गुजरना पड़ेगा। यदि सेहत के संबंध में बात करें तो आपको अपने और अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए। आपको रोजगार के क्षेत्र में भी नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आप यदि व्यापार में निवेश करते है तो आपको उस क्षेत्र में नुकसान होने की संभावना है, आपकी नौकरी खतरे में पड़ सकती है जिसकी वजह से आपके आय के श्रोत भी कम हो सकते है। इसके अलावा यदि आपके मित्र आपसे पैसे कर्ज लेते है तो उनके द्वारा वो पैसे वापस किये जायेंगे इसकी संभावना भी बहुत कम है। आपको अपनी कीमती चीजों की हिफाजत खुद ही करनी चाहिए क्योंकि उन चीजों की चोरी होने की संभावना है। इतने सारे क्षेत्र में परेशानी झेलने की वजह से आपको ये सलाह दी जाती है कि आप शांत मन और धैर्य से काम लें और परिस्थिति को देख कर घबराये नहीं उनका डट कर सामना करें।

उपाय

- राहु को मजबूत बनाने के लिए आपको मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक, सूखे भुने हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का इस्तेमाल करना चाहिए। केतु को मजबूत बनाने के लिए ईख से बनी चीजें, नारियल के रेशे से बनी चीजें, सेंधा नमक, कुर्सियाँ, सोफा, गिलोय, नींबू और करहल का इस्तेमाल करना चाहिए। मुख्य सामग्री के साथ हवन करते समय हवन में हरी दूर्वा घास या ईख का इस्तेमाल करना चाहिए।

संकटा दशा के दौरान उपाय करने से आपको बहुत लाभ होगा।

- आप अपनी सिद्ध महादशा के दौरान 6 या 13 मुखी रुद्राक्ष पहनने से लाभान्वित हो सकते हैं।

सिद्धि - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	13-8-2031 1:21
समाप्ति तिथि:	23-10-2031 1:51

सिद्धा योगिनी की तीसरी अंतर्दशा "मंगला अन्तर्दशा" है। इसकी अवधि 4 महीने 21 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "चंद्रमा" को माना गया है। चन्द्रमा द्वारा शासित ये अवधि आपको आमतौर पर अनुकूल परिणाम देती है। ये अवधि आपके लिए सुख,धन, ऐश्वर्य लेकर आती है। ये अवधि आपके जीवन में ख़ुशी और आनंद का अग्रदूत है। आपको अपने करियर में तरक्की हासिल होगी, आप जिस रोजगार की तलाश कर रहे है वो रोजगार आपको इस अवधि में प्राप्त हो सकती है। आपकी नौकरी में पदोन्नति हो सकती है या आय वृद्धि हो सकती है। पहले से रुके हुए सभी कार्य आपके इस अवधि में पूरे होंगे।

पारिवारिक तथा वैवाहिक जीवन सुखमय होगा। आपके रिश्तेदार और आपके बच्चों से आपको कुछ खुशखबरी मिलने की संभावना है। आपका वैवाहिक जीवन आनंदमय होगा, आपके जीवनसाथी के साथ बेहद खुश महसूस करेंगे और हर परिस्थिति में आपको उनका साथ मिलता रहेगा।

इस अवधि में आपको आर्थिक लाभ भी प्राप्त होंगे, व्यवसाय में किये गए निवेश से आपको लाभ मिलने की संभावना है। चूँकि आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी है इसलिए आप आराम और विलासिता की हरसंभव चीज को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे।

ये अवधि आपके लिए बेहद अनुकूल है यदि आप कड़ी मेहनत और लगन से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करते है तो आपके सभी लक्ष्य भी पूरे होंगे और आप अपनी इच्छाओं को पूरा करने का भी सामर्थ्य रखते है।

सिद्धि - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	23-10-2031 1:51
समाप्ति तिथि:	13-3-2032 2:51

सिद्धा योगिनी की चौथी अन्तर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 7 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "सूर्य" को माना गया है। सूर्य के प्रभाव की तरह इस अवधि का परिणाम भी कठोर और प्रतिकूल देने के लिए जाना जाता है। ये अवधि आपके जीवन में अनेक चुनौतियां लेकर आती है, जिसका आपको हर हाल में सामना करना पड़ता है। इस अवधि के दौरान आप में आत्मविश्वास की कमी होगी तथा आपको स्वभाव से अभिमानी और जिद्दी हो सकते है। आपके स्वभाव में इस प्रकार का बदलाव भी आपके लिए कठिनाई का कारण बन सकता है।

सूर्य का प्रकोप आपके व्यक्तिगत जीवन पर भी पड़ता है और आपकी आपके परिवार और मित्र से लड़ाई हो सकती है। आप उनसे इस हद तक बहस कर लेंगे कि आगे आने वाले समय में जब कभी आपको उनकी मदद की जरूरत होगी तो वो आपको मदद करने से इंकार कर सकते हैं। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि अपने व्यवहार पर नियंत्रण रखें और दूसरों के साथ सम्मानपूर्वक तरीके का व्यवहार करें।

इस अवधि के दौरान आपको कुछ बुरी आदत भी लग सकती है और इस चक्कर में आप अपना बहुत सारा धन फिजूलखर्च कर देंगे या अपने उपयोग के लिए दूसरे के धन का दुरुपयोग करने की भी संभावना है। आप अपने मनोरंजन के विचार में अपना और अपने परिवार के लोगों का बहुत सारा धन

पानी में डूबो सकते है। आपकी ये गतिविधियां आपके जीवन में अनेक परेशानी खड़ी कर सकता है।

इस अवधि में आपके ऊपर खतरा मंडरा सकता है जिसकी वजह से आपकी दुर्घटना होने की संभावना है। आपको आग या आग की किसी भी पदार्थ से दूर रहने की सलाह दी जाती है क्योंकि आग आपके लिए इस अवधि के बेहद खतरनाक साबित हो सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि के दौरान आप अपना ख्याल रखें और अपने स्वभाव को नियंत्रण में रखें।

सिद्धि - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि:	13-3-2032 2:51
समाप्ति तिथि:	12-10-2032 4:21

सिद्धा योगिनी की पाँचवीं अन्तर्दशा "धान्या अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 9 महीने 11 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "बृहस्पति" को माना गया है। इस दशा में शनि के प्रभाव के बाद भी इसकी धान्या अंतर्दशा में बृहस्पति के प्रभाव की वजह से ये अवधि अनुकूल परिणाम देने में सक्षम है। ऐसा माना जाता है कि बृहस्पति भाग्य लेकर आता है जिसकी वजह से इस अवधि में आपको सौभाग्य प्रदान करता है।

ये अवधि ज्यादातर लोगों के लिए भाग्यशाली होता है और इस अवधि के दौरान आपको आपके पिछले पापों से मुक्ति मिलती है और आपके अच्छे कर्मों का परिणाम आपको प्राप्त होता है।

व्यवसाय के क्षेत्र की यदि बात करें तो ये अवधि आपके रोजगार को आगे बढ़ाने के अवसर ला सकती है और इस अवधि में आपको लाभ भी प्राप्त होंगे। रोजगार के क्षेत्र में आपको बेहतर अवसर प्राप्त होंगे जैसे आपकी वेतन में बढ़ोत्तरी हो सकती है या फिर पदोन्नति हो सकती है। व्यापार कर रहे लोगों के लिए भी ये अवधि फलदायी हो सकती है। आपका कोई कार्य जो पहले से अटका हुआ है वो इस अवधि के दौरान पूरा होने की संभावना है। यदि आप कोई नयी परियोजना शुरू करना चाहते है तो इससे बेहतर समय आपके लिए कोई और नहीं होगा। इस समय आपको अपनी परियोजना को पूरा करने के लिए आवश्यक संसाधन इस अवधि के बाद न मिलने की संभावना है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आपके जो भी कार्य है आप कोशिश करें कि इस अवधि के दौरान जो सभी कार्य पूरे हो जाये।

सिद्धि - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि:	12-10-2032 4:21
समाप्ति तिथि:	23-7-2033 6:21

सिद्धा योगिनी की छठी अंतरदशा "भ्रामरी अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 11 महीने और 20 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "मंगल" को माना गया है। इस अवधि में शनि की दशा तथा मंगल की अंतर्दशा मौजूद होती है जिसकी वजह से ये मिश्रित परिणाम देने के लिए अनुकूल है।

यह अवधि न तो बहुत अच्छा फल देती है और न ही बहुत बुरा फल देती है। ये अवधि यदि आपके जीवन में कठिन परिस्थिति लाता है तो उससे निकलने के उपाय भी यदि अवधि प्रदान करती है। ये अवधि आपके पारिवारिक जीवन तथा रोजगार के क्षेत्र दोनों ही स्थिति में आपको उम्मीद में अवसर और चुनौती दोनों प्रदान करती है। इस अवधि के दौरान आपको अपने कार्य के सिलसिले में विदेश जाने की संभावना बन सकती है, और आपका ये प्रवास काल अपने जितना सोचा उससे अधिक बढ़ भी सकता है। ऐसी भी संभावना है कि आप विदेश में बस सकते है यदि आप विदेश में बसना मंजूर नहीं करते है तो भी आप अपने घर में नहीं रह पायेंगे, आपको अपने घर से दूर रहना ही पड़ेगा। यदि आप अपने घर का त्याग कर अपनी रोजगार के लिए बाहर आते है तो आपके जीवन का ये बदलाव आपके पक्ष में काम कर सकता है।

यदि इस अवधि के नकारात्मक पक्ष की बात करें तो ये अवधि आपके लिए कुछ कठिनाई भी लाती है। आप सरकारी दस्तावेजों और अपने आय-व्यय के हिसाब के सभी कागज को हमेशा तैयार रखें क्योंकि सरकार आपसे ये सभी दस्तावेज कभी भी मांग सकती है और यदि उस वक़्त ये कागज आपके पास पूरे न हो तो अधिकारियों के द्वारा आप दण्डित भी हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान ऐसी संभावना है कि आप बुरी संगत में पड़ सकते है या आपको बुरी आदतें लग सकती है। आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि के दौरान अच्छे और बुरे दोनों वक़्त में अपना संयम न खोएं और समझदारी से काम लें।

सिद्धि - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि:	23-7-2033 6:21
समाप्ति तिथि:	13-7-2034 8:51

सिद्धा योगिनी की सातवीं अंतर्दशा "भद्रिका अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 13 महीने 29 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "बुध" है। बुध के प्रभाव की वजह से इस अवधि के परिणाम भी आपके अनुकूल होंगे। ये अवधि आपके लिए ख़ुशी, धन, वैभव इत्यादि लेकर आएगा। आपको ख़ुशी तथा जश्न मनाने के कई मौके इस अवधि के दौरान मिलेंगे। ये अवधि आपके लिए खुशखबरी लेकर आ सकता है। आपके पारिवारिक जीवन में भी सुखमय माहौल रहेगा और आप अपने परिवार तथा मित्र के साथ जश्न मनाने के मौके प्राप्त करेंगे।

इस अवधि के दौरान आपकी आर्थिक तंगी भी दूर होगी जिसकी वजह से आप अपने घर को एक नया रूप देने तथा घर की साज-सज्जा के लिए अनेक संसाधन जुटाने में सक्षम होंगे। आप अच्छी आदतों को अपनी जीवन शैली में शामिल करेंगे और अपने जीवन को अपनी शर्तों पर जीने की क्षमता रखते है।

यदि आपके स्वास्थ्य की बात की जाये तो आपका स्वास्थ्य इस अवधि में सही रहेगा और आपको अपने स्वस्थ जीवन के निर्माण के लिए इस अवधि का लाभ उठाना चाहिए। अपने स्वस्थदिनचर्या की वजह से आपको नयी ऊर्जा का आभास होगा।

कार्यक्षेत्र में भी आपको लाभ प्राप्त होगा, आपका संबंध आपके सहकर्मी और वरिष्ठों के साथ आपके संबंध में सुधार हो सकता है, जिससे आपके लिए अपना लक्ष्य हासिल करना आसान हो जायेगा। यदि आप कोई नया कार्य शुरू करने की इच्छा रखते है तो ये अवधि आपके कार्य को शुरू करने के लिए अनुकूल है। आपको सलाह दी जाती है कि आप चाहे जो भी कार्य करें बस पूरी लगन के साथ करें और इस अवधि का भरपूर लाभ उठायें।

सिद्धि - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि:	13-7-2034 8:51
समाप्ति तिथि:	11-9-2035 17:51

सिद्धा योगिनी की आठवीं और अंतिम अंतर्दशा "उल्का अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 9 महीने 11 दिनों को होती है तथा इसके स्वामी "शनि" है। शनि की दशा में शनि की अंतर्दशा होने की वजह से ये अवधि प्रतिकूल परिणाम ही देती है। शनि द्वारा शासित चरण आमतौर पर आसान नहीं होता है।

इस अवधि में आपके आत्मविश्वास में कमी होने की संभावना है साथ ही आपके जीवन में कष्ट और क्लेश भी बना ही रहेगा। इस अवधि के दौरान आपको जीवन के हर कदम पर चुनौती का सामना करना पड़ सकता है। रोजगार के क्षेत्र में भी आपको हानि होने की संभावना है, आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे किसी बात को लेकर दुखी हो सकते है जिसकी वजह से आपकी नौकरी पर भी खतरा हो सकता है। आपकी आय में कटौती या नौकरी जाने की वजह से आपको धन हानि का दुःख भी सहना पड़ेगा। अपने व्यापार के मामले में आप सोच समझ कर फैसला लें क्योंकि एक भी

गलत फैसला आपको वित्तीय नुकसान की खायी में धकेल सकता है और इसकी वजह से आपकी इज्जत-प्रतिष्ठा भी संकट में पड़ सकती है।

आपके वैवाहिक जीवन पर भी इस अवधि का प्रतिकूल प्रभाव ही पड़ेगा। जीवनसाथी के साथ आपके प्रेम में कमी आ सकती है, आप दोनों के बीच किसी बात को लेकर मतभेद हो सकते है। ये अवधि आपके प्रेम भरे स्वभाव को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा जिसका सीधा असर आपके प्रियजनों और आपके बच्चों पर पड़ेगा।

यदि स्वास्थ्य की बात करें तो स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह अवधि बहुत अच्छी नहीं हो सकती है। आपको स्वस्थ रहने के लिए एक स्वस्थ जीवन शैली का पालन करने और सावधानी बरतने की आवश्यकता है। अगर आपको कोई भी स्वास्थ्य संबंधी समस्या का आभास होता है, तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लें और उनकी बताई गयी बात का पालन करें। आपको एक बात समझने की आवश्यकता है कि समय चाहे कितना भी बुरा हो वो एक न एक दिन गुजर ही जाता है इसलिए आपको इस अवधि के दौरान घबराने की आवश्यकता नहीं है यदि आप शांत मन और संयम से काम लेंगे तो हर परेशानी से पार पा लेंगे।

- आप अपनी सिद्ध महादशा के दौरान 6 या 13 मुखी रुद्राक्ष पहनने से लाभान्वित हो सकते हैं।

संकटा योगिनी दशा

प्रारंभ तिथि:	11-9-2035 17:51
समाप्ति तिथि:	11-9-2043 17:51

संकटा योगिनी दशा की आठवीं दशा है। इसकी अवधि 8 वर्षो की है तथा इसके स्वामी "राहु" को माना गया है। राहु के प्रकोप की वजह से इस अवधि का परिणाम प्रतिकूल होता है। जैसा कि सभी जानते है कि राहु को दुर्भाग्य, दुख और शोक लाने के लिए जाना जाता है, इसलिए इस अवधि के दौरान भी आपको अपने जीवन के सभी पहलुओं में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

आपके रोजगार के क्षेत्र में भी स्थिति आपके अनुकूल नहीं होने की संभावना है। ऐसी संभावना है कि कार्य क्षेत्र में आपको आपके वरिष्ठ आपके विचार से सहमत नहीं होंगे और आपके लक्ष्य को प्राप्त करने में आपका समर्थन न दें। अपने सहकर्मी के साथ भी आपको समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि बातचीत के दौरान आप शांत और विनम्र रहने की कोशिश करें क्योंकि आपका ये व्यवहार आपकी नौकरी पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता हैं। व्यापार के क्षेत्र में यदि आप आगे बढ़ना चाहते है तो आपको हानि होने की संभावना है। आपको अपने जीवन में अनेक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आप अपने कार्यक्षेत्र में कुछ कानूनी मुद्दों में भी फंस सकते है जिसकी वजह से आपको कारावास भी हो सकता है या जुर्माना भरना पड़ सकता है। आप समझ में होनी इज्जत, प्रतिष्ठा खो सकते सकते है। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप किसी भी अवैध गतिविधि में शामिल न हो।

इस अवधि के दौरान आप अपने किसी प्रियजन को खो सकते है। इस अवधि के दौरान आपके बच्चों को भी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, ऐसी संभावना है कि उसको उनके मन के हिसाब के विद्यालय में नामांकन न मिलें या परीक्षा का परिणाम मन के अनुकूल न हो । आपको इस अवधि के दौरान अपने मन को शांत रखने की कोशिश करें और जल्दबाजी में कोई भी फैसला लेने से बचें।

उपाय

- राहु की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए गगूल, मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सूखी अदरक, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का उपयोग कर करके हवन कर सकते हैं। केतु की स्थिति को मजबूत करने के लिए ईख से बनी वस्तुएं, नारियल के रेशे से बनी वस्तुएं, सेंधा नमक, कुर्सियां, सोफा, गिलोय, नींबू और करहल के बीज का प्रयोग आप हवन में कर सकते हैं।

- राहु केतु विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

संकटा - संकटा दशा

प्रारंभ तिथि:	11-9-2035 17:51
समाप्ति तिथि:	22-6-2037 1:51

संकटा योगिनी की पहली अंतर्दशा "संकटा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 3 महीने और 20 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "राहु" है। राहु की दशा में राहु की अंतर्दशा होने की वजह से इस अवधि के परिणाम भी प्रतिकूल होते है। आपको जीवन में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। आमतौर पर यह एक प्रतिकूल अवधि ही है। इस अवधि के दौरान आपको रोजगार के क्षेत्र में कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है।

आपको आपके वरिष्ठ अधिकारियों की नाराजगी, काम करने में बाधा इत्यादि का सामना करना पड़ सकता है। सरकारी कार्यों में भी कोई न कोई बाधा लगी रहती है इसके साथ ही आपको अपनी वर्तमान नौकरी को छोड़ कर किसी दूसरे जगह भी जाना पड़ सकता है।

आपको ये सलाह दी जाती है कि आप केवल अपने काम पर अपना ध्यान केंद्रित रखने की कोशिश करें और ये सुनिश्चित करें कि आप अपने नियोक्ता द्वारा निर्धारित किसी भी प्रणाली, प्रक्रियाओं, नियमों का पालन करते हैं।

इस अवधि के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति भी कमजोर हो सकती है जिसके अनेक कारण होंगे। आपकी आय में कटौती हो सकती है और व्यापार में किये गए निवेश में भी आपको नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपनी कमाई में से कुछ बचत करने की कोशिश करें जो इस कठिन परिस्थिति के आपके लिए लाभप्रद साबित होगी। इस अवधि के दौरान आप अपने और अपने प्रियजनों की सेहत का ध्यान रखें क्योंकि इस अवधि में आपको अपने किसी प्रियजनों के खोने की संभावना है।

उपाय

- राहु को मजबूत करने के लिए आपको मुरमुरे, मकोय का पौधा या टहनी, अदरक या सोंठ, सूखे तले हुए अनाज से बनी चीजें और बरमूडा घास का उपयोग करना चाहिए। केतु की स्थिति को मजबूत करने के लिए ईख से बनी वस्तुएं, नारियल के रेशे से बनी वस्तुएं, सेंधा नमक, सोफ, गिलोय, नींबू का प्रयोग हवन के लिए कर सकते हैं। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ हरी दूर्वा घास या ईख का भी हवन में प्रयोग करना चाहिए। संकटा दशा के दौरान ये उपाय करने से आपको अत्यंत लाभ प्राप्त होगा।

- विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

संकटा - मंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	22-6-2037 1:51
समाप्ति तिथि:	11-9-2037 5:51

संकटा योगिनी की दूसरी अंतर्दशा "मंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 6 महीने 11 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "चंद्रमा" को माना गया है। चंद्रमा के प्रभाव की वजह से इस अवधि के परिणाम भी प्रतिकूल ही होते है। इस अवधि का असर आपके मानसिक और शारीरिक दोनों स्थिति पर पड़ता है।

इस अवधि के दौरान आपको अपनी सेहत का विशेष ध्यान रखना चाहिए। आपको मस्तिष्क संबंधी समस्या का हो सकती है, जिसका ईलाज करवाना आपके लिए बेहद जरूरी होगा। आपको अपने साथ-साथ अपने परिवारजनों तथा अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य का भी ख्याल रखना चाहिए। इस अवधि के दौरान आपकी माता पर स्वास्थ्य संबंधी खतरा हो सकता है, इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि अपने परिवार का एक निर्धारित नियमित स्वास्थ्य जांच करवाते रहें ताकि भविष्य में आने वाले किसी भी खतरे को टाला जा सके।

यदि व्यक्तिगत संबंध की बात करें तो आपके परिवार और आपके जीवनसाथी दोनों के साथ आपके तालमेल ठीक नहीं बैठने की संभावना है। आपके और आपके जीवनसाथी के बीच किसी बात को लेकर गलतफहमी हो सकती है जिसकी वजह आपके बीच मतभेद होने की संभावना है। आपको ये सलाह दी जाती है कि ऐसी परिस्थिति में बात को आगे न बढ़ने दें और जीवनसाथी के साथ बैठ कर बातचीत कर के अपने बीच की इस गलतफहमी को दूर करने का प्रयास करें। अन्यथा ये ग़लतफ़हमी आपके रिश्ते को ख़राब कर देगी।

चंद्रमा का स्वभाव है मन और भावनाओं पर शासन करना ऐसे में इस अवधि के दौरान आप मानसिक और भावनात्मक रूप से पीड़ित हो सकते है। लगातार बने इस तनाव और प्रतिकूल परिस्थिति आपको अस्वस्थ्य बना सकती है इसके साथ ही आप बुरी आदतों के शिकार हो सकते है। इस अवधि

के दौरान आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने विवेक से काम लें और अपने मन को शांत रखने की कोशिश करें।

संकटा - पिंगला दशा

प्रारंभ तिथि:	11-9-2037 5:51
समाप्ति तिथि:	20-2-2038 13:51

संकटा योगिनी की तीसरी अन्तर्दशा "पिंगला अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 9 महीने की होती है तथा इसके स्वामी "सूर्य" को माना गया है। सूर्य के कठोर प्रभाव का असर इस अवधि पर भी पड़ता है जिसकी वजह से ये अवधि भी प्रतिकूल परिणाम देता है। इस अवधि के दौरान आपको मानसिक परेशानी हो सकती है इसके साथ ही आपको अपने व्यक्तिगत संबंध में भी कुछ समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

इस अवधि के दौरान आपके कई शत्रु हो सकते है, जो आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते है या आपको परेशानी में डाल सकते है। इस स्थिति की वजह से आप तनाव में रह सकते है। इस अवधि के दौरान आपके बच्चें दुःखी और परेशान रह सकते है या फिर आपको आपके बच्चों से संबंधित कोई दुखी करने वाले समाचार मिल सकते है। ऐसी भी संभावना है कि इस अवधि के दौरान आपके बच्चें का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आपको ये सलाह दी जाती है कि अपने बच्चों के साथ कुछ समय बिताने की कोशिश करें ताकि आपके बच्चें अपनी परेशानी आपके साथ साझा कर सके और आप उनकी समस्या का निदान ढूंढ पायें।

आर्थिक रूप से भी ये समय आपके लिए भारी सिद्ध होगा आपको कई सारी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपके रोजगार के क्षेत्र में आपको खतरा हो सकता है जैसे आपकी आय कम हो सकती है या आपकी नौकरी जा सकती है या फिर आपको व्यापार के निवेश में नुकसान हो सकता है। आपको अपनी कीमती चीजों को संभाल के रखने की आवश्यकता हो क्योंकि आपके घर चोरी होने की भी संभावना है।

आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि के दौरान आप सतर्क रहें और अपने दिमाग को शांत रखने की कोशिश करें।

उपाय

- आप पलाश के पेड़ के उत्पादों जैसे लकड़ी, फूल और पत्तियों का उपयोग कर सकते हैं। सफेद चंदन, सीपियां, पानी और रेशे वाला नारियल तथा नारियल के रेशों से बनी वस्तुओं का उपयोग करना भी आपके लिए लाभकारी रहेगा। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ पलाश, डाक के पत्ते और टहनियों का भी उपयोग करना चाहिए। संकट मंगल दशा के दौरान उपाय करने से आपको अत्यंत लाभ प्राप्त होगा।

- विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

संकटा - धान्य दशा

प्रारंभ तिथि:	20-2-2038 13:51
समाप्ति तिथि:	22-10-2038 1:51

संकटा योगिनी की चौथी अंतर्दशा "धन्या अंतर्दशा" है। इसकी अवधि 11 महीने 20 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "बृहस्पति" को माना गया

है। बृहस्पति और राहु दोनों के प्रभाव की वजह से इस अवधि का परिणाम भी दोनों ग्रहों के हिसाब से मिश्रित ही प्राप्त होता है। ये अवधि आपके लिए शुभ और अशुभ दोनों तरह के परिणाम लाता है। बृहस्पति को सौभाग्य लाने वाला माना जाता है इसलिए इसपर राहु का असर भी बहुत कम होता है।

यदि इस अवधि के शुभ प्रभाव की बात करें तो आपके रोजगार के क्षेत्र के क्षेत्र में ये अवधि शुभ प्रभाव देता है। इस अवधि के दौरान आपके भविष्य के लिए बेहतर मार्ग खुलेंगे और आपको विदेश जाने के अवसर प्राप्त होंगे। आपको विदेश में भी अच्छे ऑफर और अच्छे संबंध स्थापित करने के मौके मिलेंगे।

व्यक्तिगत संबंध के क्षेत्र में भी आपको शुभ परिणाम मिलने की संभावना है। आपको अपने बच्चों से अच्छी खबर मिलने की संभावना है। इस अवधि में आप अपने पारिवारिक सुख और शांति का आनंद लेंगे और अपनी छुट्टियों का वक्त अपने परिवार के साथ बिता सकते है।

इस अवधि के अशुभ पक्ष में आपका स्वास्थ्य आता है। स्वास्थ्य की यदि बात करें तो ये अवधि आपके स्वास्थ्य के लिए बिल्कुल भी शुभ नहीं है। आपको पेट, सर्दी-खांसी, दस्त इत्यादि जैसी समस्याएं लगी ही रहेगी। आपको ये सलाह दी जाती है कि इस अवधि में आप अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें और नियमित स्वास्थ्य जांच करवाते रहें।

उपाय

- आप बेलपत्र, कमल के बीज, महुआ के पेड़ के फूल, लाल चंदन, आक के पेड़ के फूल, पत्ती और लकड़ी तथा आंवला जैसी वस्तु अपने पास रख सकते हैं। इनमें से एक या एक से अधिक वस्तुएं रखने से आपको लाभ होगा क्योंकि इन वस्तुओं से भगवान सूर्य प्रसन्न होंगे। हवन करते समय मुख्य सामग्री के साथ-साथ आक का भी प्रयोग करना चाहिए। मंगला पिंगला दशा के दौरान इन उपायों को करना लाभकारी सिद्ध होगा।

- विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

संकटा - भ्रामरी दशा

प्रारंभ तिथि:	22-10-2038 1:51
समाप्ति तिथि:	11-9-2039 17:51

संकटा योगिनी की पांचवीं अंतर्दशा "भ्रामरी अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 13 महीने और 10 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी "मंगल" है। मंगल के प्रभाव की वजह से इस अवधि का परिणाम भी प्रतिकूल होता है। ये अवधि आपके लिए धन, वैभव, ऐश्वर्य के क्षेत्र में चिंताएं लेकर आता है।

ये अवधि आपके करियर के हिसाब से परेशानी का कारण बन सकता है, इसमें आपको आगे बढ़ने के मौके तो मिलेंगे किन्तु उसमे बाधा भी बहुत आयेगी। आपको विदेश यात्रा के मौके मिलेंगे किन्तु आपको इस तरह के मौकों की पूरी जांच कर लेने के बाद ही आगे की योजना बनानी चाहिए। यदि आपको विदेश यात्रा के अवसर नहीं मिलते है तो आपको बेहतर रोजगार के मौकों के लिए अपने घर से दूर रहना पड़ सकता है।

इस अवधि में आपको अपने शत्रु से सावधान रहना चाहिए क्योंकि वो आपको नुकसान पहुंचाने की पूरी कोशिश करेंगे किन्तु आपका कुछ बिगाड़ नहीं पायेंगे। हालांकि इस सब की वजह से आपको मानसिक और भावनात्मक तनाव हो सकता है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप किसी भी कार्य को करते हुए या किसी से बात करते हुए अपने मन को शांत रखें और जल्दीबाज़ी में कोई फैसला न लें।

इस अवधि के दौरान आपको स्वास्थ्य संबंधी भी चिंता घेर सकती है इसलिए आपको अपने और अपने परिवार के स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

उपाय

- बेल की लकड़ी, पत्ते और फूल, खैर के पेड़ की लकड़ी, लाल फूल, ब्राह्मी, साबुत लाल मिर्च, काली सरसों और हरड़ का उपयोग आपके मंगल को बल देने के लिए किया जाना चाहिए। मुख्य सामग्री के साथ हवन करते समय, हवन में पीपल के पेड़ की शाखा, पत्तियों का उपयोग करना चाहिए। संकटा भ्रामरी दशा के दौरान उपाय करने से आपको बहुत लाभ होगा।

- आप अपनी विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष पहनने से लाभ उठा सकते हैं।

संकटा - भद्रिका दशा

प्रारंभ तिथि:	11-9-2039 17:51
समाप्ति तिथि:	21-10-2040 13:51

संकटा योगिनी की छठी अंतरदशा "भद्रिका अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 16 महीने और 2 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी के रूप में "बुध" को माना गया है। बुध के प्रभाव की वजह से ये अवधि अनुकूल परिणाम देने में सक्षम है। इस अवधि में आपको धन, वैभव की प्राप्ति होगी।

ये अवधि आपके जीवन में लगातार चल रही परेशानी से राहत देगा। इस अवधि में आपके संबंध बेहतर होंगे तथा आपको आगे बढ़ने के मौके मिलेंगे।

ये अवधि आपके लिए आसान तो नहीं होगा किन्तु अपनी मेहनत से आप पहले से चली आ रही परेशानी से निजात पा सकते है। इस अवधि में आप कई सारी ज्ञान की चीजें सीख सकते है। यदि आप कोई ऐसी पढ़ाई करना चाहते है जो कि आप कई दिनों से चाह रहें थे किन्तु आपको मौका नहीं मिल रहा था तो ये अवधि आपके लिए सही समय है उन चीजों में अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए। जो लोग रोजगार के क्षेत्र में बेहतर करना चाहते है उनकी बेहतर नौकरी की तलाश इस अवधि में पूरी हो सकती है साथ ही आपके आय वृद्धि या पदोन्नति की भी संभावना है।

आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा, आपकी स्थिति पहले से अच्छी होगी। पैसे की तंगी दूर होने की वजह से आप अपने महंगे शौक पूरे करने की कोशिश करेंगे। आराम और सुख-सुविधा की सारी चीजें आप खरीद सकते है। आपको ये सलाह दी जाती है कि यदि आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी हुई है तो ये काफी अच्छी बात है किन्तु आपको अपने धन का खर्च थोड़ा संभल के करना चाहिए ताकि कभी किसी मुसीबत में आपके बचाये हुए धन आपके काम आ सके। आप जल्दबाज़ी में कोई फैसला न लें और किसी भी चीज पर विचार शांत मन से करें।

संकटा - उल्का दशा

प्रारंभ तिथि:	21-10-2040 13:51
समाप्ति तिथि:	20-2-2042 13:51

संकट योगिनी की सातवीं अंतर्दशा "उल्का अंतर्दशा" है। इसकी अवधि लगभग 18 महीने और 18 दिनों की होती है तथा इसके स्वामी के रूप में "शनि" को माना जाता है। राहु की दशा में शनि की अंतर्दशा होने की वजह से इस अवधि में कोई न कोई परेशानी लगी ही रहती है तथा ये अवधि आमतौर पर प्रतिकूल अवधि मानी जाती है।

इस अवधि के दौरान आपके जीवन में चुनौतीपूर्ण स्थिति बन सकती है। इस अवधि के दौरान सबसे प्रमुख चिंता का विषय आपके लिए आपका

स्वास्थ्य होगा। इस अवधि के दौरान आपको अपनी सेहत का ख्याल रखने की आवश्यकता है। इस अवधि के दौरान आपको कोई गंभीर घातक बीमारी होने की संभावना है। इसलिए आपको ये सलाह दी जाती है कि आप नियमित तौर पर अपने स्वास्थ्य की जाँच करवायें और किसी भी प्रकार की समस्या होने पर तुरंत अपने डॉक्टर की सलाह लें।

आर्थिक रूप से भी आपको अनेक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यापार में किये गए निवेश में आपको हानि हो सकती है या आप किसी प्रकार की धोखाधड़ी का शिकार हो सकते है। आपकी आय में कौटती या नौकरी जाने की संभावना भी बन सकती है। आपको ये सलाह दी जाती है कि आप अपने पैसों को खर्च करते हुए थोड़ी सावधानी बरते ताकि आप कुछ पैसों की बचत कर सकें। आपको इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए की पैसे का निवेश कहाँ और कैसे किया जाना चाहिए ताकि हानि की संभावना बहुत कम बने। धन की कमी की वजह से आपको अपनी विलासिता भरी ज़िंदगी की कुछ चीजों का भी त्याग करना पड़ सकता है।

> कांटेदार पौधों का उपयोग करें। हवन करते समय मुख्य सामग्रियों के साथ-साथ शमी/खेजड़ी के पेड़ या सेमल की शाखा, पत्ते या टहनी का भी हवन में उपयोग कर सकते हैं। संकटा तथा उल्का दशा के दौरान उपाय करना आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा।
>
> - विकट महादशा के दौरान 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

संकटा - सिद्धि दशा

प्रारंभ तिथि:	20-2-2042 13:51
समाप्ति तिथि:	11-9-2043 17:51

संकटा योगिनी की आठवीं और अंतिम अंतर्दशा "सिद्धा अंतर्दशा" है। इसकी अवधि केवल 10 दिनों को मानी जाती है तथा इसके स्वामी के रूप में "शुक्र" को जाना जाता है। शुक्र के प्रभाव की वजह से इस अवधि का परिणाम भी आपके जीवन में अनुकूलता और अच्छे समाचार ही लेकर आता है।

ये अवधि आपकी जीवन में चल रही परेशानी को दूर करने में आपकी मदद कर सकती है। इस अवधि के दौरान आपको अपने लक्ष्य को प्राप्त करने तथा जीवन में आगे बढ़ने के अनेक मौके मिलेंगे। इस अवधि के दौरान आपके आत्मविश्वास में भी बढ़ोतरी होगी जिसकी वजह से आपको आवश्यक समर्थन, प्रोत्साहन और ऊर्जा मिल सकती है। आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके काम से खुश हो कर आपको ईनाम दे सकते है और आपकी आय वृद्धि या पदोन्नति की उम्मीद भी बढ़ जाती है। आपके लिए ये अवधि एक सकारात्मकता लेकर आएगा जिसमे आप अपने किसी भी कार्य को अंजाम दे सकते हैं, इसलिए ये अवधि आपकी परियोजनाओं को शुरू करने के लिए भी बिल्कुल सही साबित होगा। इस अवधि में आपको अन्य कोई परेशानी नहीं रहेगी जिसकी वजह से आप अपना पूरा ध्यान अपनी परियोजना पर लगा सकते है।

ये अवधि आपके मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होगा, इस अवधि में आप मन से शांत और स्थिर महसूस करेंगे।

आपका व्यक्तिगत जीवन भी इस अवधि के दौरान बहुत अच्छा रहेगा। आपके परिवार और जीवनसाथी के साथ संबंध प्रगाढ़ होंगे साथ ही आपके बच्चें आपको अपनी पढ़ाई या नौकरी से जुड़ी कुछ खुशखबरी सुना सकते है। आपको अपने जीवनसाथी और बच्चों से साथ समय व्यतीत करने का मौका भी मिलेगा। आपके परिवार वाले आपसे बेहद खुश रहेंगे।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी आपको चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है किन्तु फिर भी आपको अपनी सेहत का ध्यान रखना चाहिए ताकि भविष्य में भी किसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। आपको सलाह दी जाती है कि आपको जो अवसर प्राप्त हो रहें है, उन अवसरों का अच्छी तरह से उपयोग करें और अधिक से अधिक लाभ कमा सकें ताकि कल को आपको किसी भी बात की ग्लानी न रहें कि आपने सही समय पर सही फैसला नहीं लिया।

With the help of our experts we does all the complex astronomical and algorithmic calculations for your horoscope and provide you this Janam Patrika in PDF format.

iRise WebnApp Technologies Pvt. Ltd.

http://www.astrorobo.com
+91-79990-95593
iwebnapp@gmail.com